



Bodleian Libraries

UNIVERSITY OF OXFORD

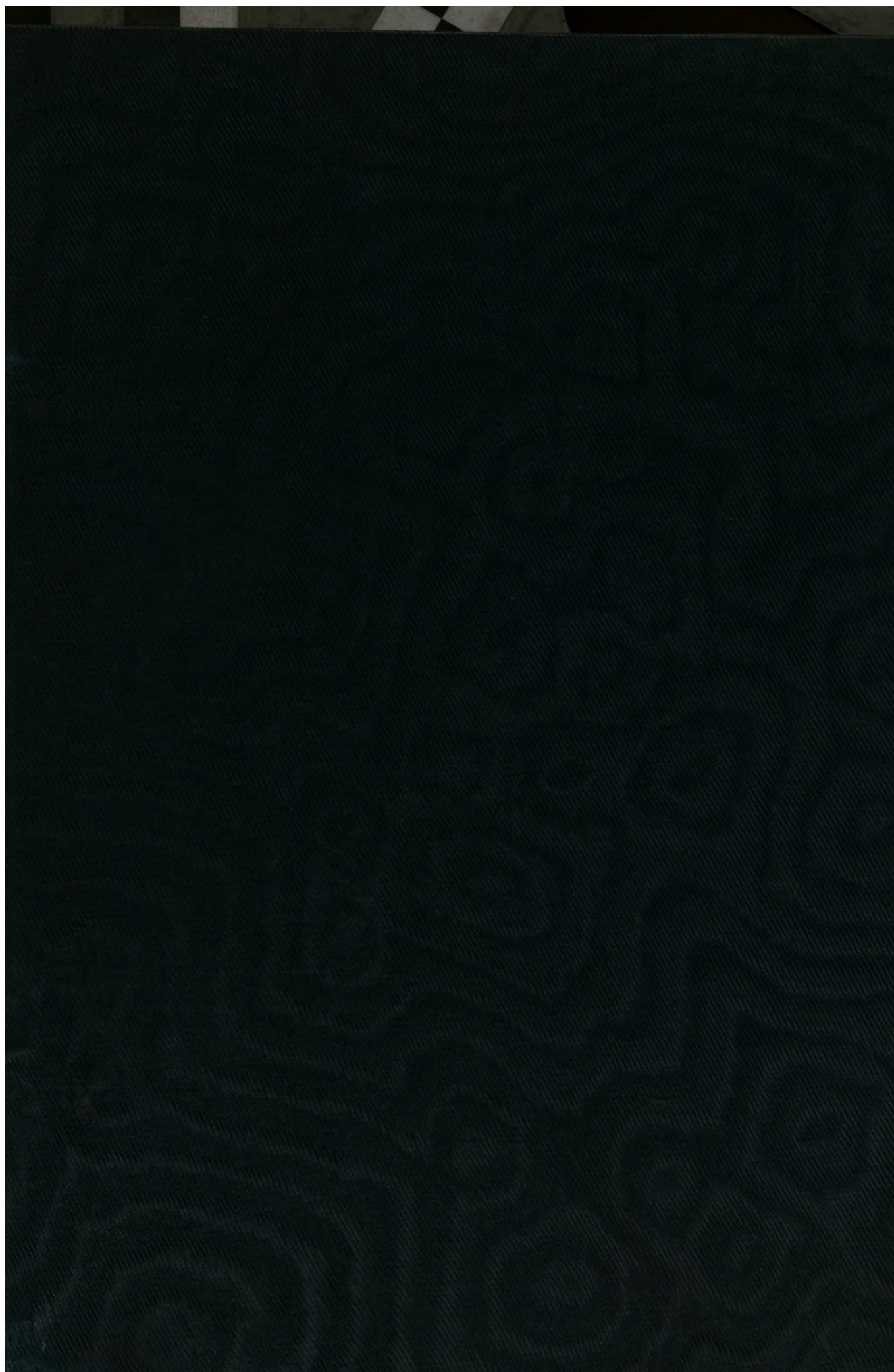
This book is part of the collection held by the Bodleian Libraries
and scanned by Google, Inc. for the Google Books Library Project.

For more information see:

<http://www.bodleian.ox.ac.uk/dbooks>



This work is licensed under a Creative Commons Attribution-NonCommercial-
ShareAlike 2.0 UK: England & Wales (CC BY-NC-SA 2.0) licence.





16. D. 62

16 D 6

Mahimnah-stotra.

पु
क
ल
स
हो

क
र
क
र

ॐ





महिम्नस्तोत्र

गन्धर्वों के राजा पुष्यदन्ताचार्य का बनाया हुआ श्री गौरीशंकर जी की प्रसिद्ध स्तुति है इस स्तुति को बना कर पुष्यदन्ताचार्य गुरु के क्रोध से उद्धार होकर मुक्ति को प्राप्त हुआ यह स्तोत्र शीघ्रफलदायक है और महादेव जी को अति प्यारा है दीक्षा और दान, तप, तीर्थ होम, यज्ञ का सोलह गुणा फल इस के नित्य पाठ करने से होता है

भक्ति अनुराग के निमित्त अर्थ सहित

तीसरी बार

लखनऊ

मुंशी नवलकिशोर के यंत्रालय में छपा

चैत्र संवत् १९३६

مہمن استوتر

گندھربوں کے راجہ پُشپ دنتا چارج کا بنایا ہوا ہے مشہور و معروف اہنت شری گوری شکر جی کی ہے
اس آچارج نے اس اہنت کو بنا کر اپنے گرو کے سراپ سے نجات پا کر نکت پدارتھ کو حاصل کیا
یہ استوتر جلد پھل دایک اور مادیو جی کو بہت پیارا ہے دیکھنا اور دان تپ تیرتھ ہوم جگ کاسٹوڈ گنا پھل
اسکے روز روز پات کرنے سے ہوتا ہے
چنانچہ بیگت انراگ کے نسبت ارتھ سہیت فارسی اور دیوناگری حرفون میں
تیسری مرتبہ

مطبع نامی فشی نول شتور مقام لکھنؤ میں چھپا

۱۹۰۶ اپریل ۱۰ء

श्रीगणेशायनमः

अथमहिम्न सटीक लिख्यते

मूल. महिम्नः पारन्ते परम
विदुषो यद्यसदृशीः स्तुतिर्व-
ह्यादीनामपितदवसन्नास्त्व
यि गिरः। अथावाच्यः सर्व-
स्वमतिपरणामावधिगुण
न ममाप्येषस्तोत्रे हरनिर-
पवादः परिकरः ॥ १ ॥ १ ॥
टीका. पुष्पदन्ताचार्य स्तुति करते
हैं कि हे महादेव तुम्हारी महिमा के
जो पार को न जानै उसकी स्तुति
जो तुम्हारे पसन्द के माफिक न हो
तो ब्रह्मादिको ने तुम्हारी जो स्तुति
करी है वह भी तुम्हारे नापसन्द हो-
जावैगी क्योंकि स्तुति नाम है गुणों
का कहना तुम्हारे गुणों के पार को मैं
भी नहीं जानता हूँ और ब्रह्मादिक
भी नहीं जानते हैं जो उनकी स्तुति
छापने पसन्द करी तो मेरी भी स्तु-
ति पसन्द कीजिये मैं और वे गुणों कि
जानने में बाधक हूँ इस वास्ते स्तुति
करने वाले अपनी अपनी मति के
प्रमाण के अनुसार सभी अच्छे हैं

श्री गीतानि

श्री गीतानि जगत्का शिखर
अश्लोक

महंते पारन्ते परमं ब्रह्मेश्वरी शि-
स्तं रत्नं दाम्पत्यं तदुत्तमं तदुत्तमं
गुरु- अत्मा बाच्यं सर्वभूतं प्रना-
मादधं गुरुं गुरुं तदुत्तमं तदुत्तमं
प्रनामादधं गुरुं तदुत्तमं तदुत्तमं

श्रीका

पुष्पदन्ताचार्य स्तुति करते हैं कि हे महादेव तुम्हारी महिमा के जो पार को न जानै उसकी स्तुति जो तुम्हारे पसन्द के माफिक न हो तो ब्रह्मादिको ने तुम्हारी जो स्तुति करी है वह भी तुम्हारे नापसन्द हो जावैगी क्योंकि स्तुति नाम है गुणों का कहना तुम्हारे गुणों के पार को मैं भी नहीं जानता हूँ और ब्रह्मादिक भी नहीं जानते हैं जो उनकी स्तुति छापने पसन्द करी तो मेरी भी स्तुति पसन्द कीजिये मैं और वे गुणों कि जानने में बाधक हूँ इस वास्ते स्तुति करने वाले अपनी अपनी मति के प्रमाण के अनुसार सभी अच्छे हैं

میرا جو یقین ہے آپ کی ستوتی کر
نے کے واسطے اچھا ہے اور جتنے
ستوتی کرنے والے ہیں آپ کی آپ
کی بুদ্ধی کے مافیک سبھی اچھے ہیں۔

اشلوک

مू. अतीतः पञ्चानंतवचमहि
मावाचनसयोरतद्यावत्या
यंचकितमभिधत्ते श्रुतिर-
पि। सकस्यस्तोतव्यः कति
विधगुणः कस्यविषयः पदे
त्वर्वाचीनेपततिनमनः क
स्यनवचः ॥ २ ॥ २ ॥ २ ॥

اتی تہ پنچانانت توخ مہا بانگ
مسیور تدبیر ثنائیات حکمت مہم
دھتے شرت رب۔ سکسیہ استو
تبتہ کت بدھ گنہ کسبہ بکھیہ پر
تور یا چینی پتت نمہ کسبہ نوجہ۔

ٹیکا

دی. हे शिव तुम्हारी जो महिमा है सो
वाणी और मन से भी परे है जो कहो
कि यदि वाणी और मन से परे है
तो वेद कैसे गाता है तो यह सम-
झो कि वेद जो है संसार को हटाता
हुआ उरता डरता युक्ति से कहता है
वेद भी गुण जिनके नहीं कह सकता है

ہے مہادیو جی تمہاری جو مہما ہے سو بانی
اور من سے بھی باہر ہے اگر کوئی اعتراض کرے
کہ جو بانی اور من سے باہر ہے تو بید کس طرح
گاتا ہے تو یہ جواب ہے کہ بید سنسار کو ہٹاتا
ہو اڑتا ڈرتا تدبیر سے کہتا ہے در حالیکہ
بید بھی جن کے گن نہیں کہہ سکتا ہے



انکی ستوت کون کر سکتا ہے اور یہ کون کہہ
سکتا ہے کہ کتنے گن انہیں ہیں اور انہیں کسکی
اندر ہی پہنچ سکتی ہے مہنی کیسی نہیں پہنچ سکتی
ہی اس سے یہ معلوم ہوتا ہے کہ بید جو کہتا ہے
وہ اوپر سے جو ایک بات ملی اسکو بتاتا ہے۔
اشلوک

॥ २ ॥ २ ॥
मू. मधुस्फीतावाचः परम
ममृतं निर्मितवतस्तव ब्रह्म-
न किम्वागपि सुरगुरोर्विस्म-
यपदं । ममत्वे तां वाणीं गु-
णकथनपुण्येन भवतः पु-
नामीत्यथैस्मिन् पुरमथन
बुद्धिर्व्यवसिता ॥ ३ ॥ ३ ॥

ہی۔ معاد یوحی منزل اور بہت پر ہم امرت روپ
جو بند روپ بانی ہی اس کے پر گھٹ کر نیوالے
جو ہم سو تھارے آگے بر مصباحی کی بانی کیا
کچھ عجیب غریب ہی مہنی کچھ عجیب غریب نہیں
کیونکہ جنہوں نے بید کو پر گھٹ کیا ان کے آگے
بر مصباحی بانی کیا عجیب غریب ہو گئی کیونکہ
سورج کے آگے چراغ کچھ عجیب غریب چیز نہیں
ہی اگر کوئی اعتراض کرے کہ بر مصباحی کی

۲
مُحْسُ پھینکا با صہ پر ہم مرتنگ
نِزْمَت و تَمْتُو بر مھن کبیا گپ سر
گُرُور بھمی پدنگ - ممتوئے تانگ
بانینگ گن گھن پتین بھوتہ پنامی
تیر تھے اہمن پر مھن بد بھر بوشا۔
طیحا

۳
ہی۔ مہا دے و निर्मल और बहुत पर-
म मृत रूप जो वेद रूप वाणी है उसके
प्रगट करने वाले जो तुम तुम्हारे अगाड़ी
ब्रह्मा की वाणी क्या कुछ आश्चर्य रूप
प है अर्थात् कुछ आश्चर्य रूप नहीं क्यों
कि जिन्होंने खास वेद को प्रगट किया उ-
नके आगे ब्रह्मा की वाणी क्या आश्चर्य
होगी क्योंकि सूर्य के अगाड़ी दीपक अ-
चरज नहीं है जो कोई कहै कि ब्रह्माजी

کی واणी تو شिवजी کے آگے آश्चर्य
نہی تُو جو شिवजी کی ستوتی کرتا ہے تو
تیری واणी آश्चर्य رُپ کسے ہو گی دس
واستے میں کہتا ہوں کہ میری تو बुद्धی یہ
بات کہتی ہے کہ شिवजी کے گونوں کو
وर्णन کر کے اپنی واणी کو पवित्र
کرتا ہوں ہے पुरमथन इस वास्ते मेय
भी स्तुति करना उचित है ॥ ३ ॥ ३ ॥

मू. तवैश्वर्यं यत्तज्जगदु-
दयरक्षा प्रलयकृतं त्रयीव-
स्तु व्यस्तं तिसृषु गुणभिन्ना-
मुतनुषु। अभव्यानामस्मि-
न्वरदरमणीयामरमणीं वि-
हन्तुं व्याक्रोशीं विदधत इ-
है केजड धियः ॥ ४ ॥ ४ ॥

श्री. हे महादेव तुम्हारा जो प्रताप
हे सो जगत को रचता है और जगत
की रक्षा करता है और सारे वेदों का
धन है और तीन जो मूर्ति ब्रह्मा वि-
ष्णु महेश की हैं तीनों में भल कर
हा है ऐसा तुम्हारा प्रताप है हे म-
हादेव कर्म शास्त्र वाले जो हैं जड
बुद्धि वाले हैं सो वे देवताओं की
तारीफ की बुवाई करते हैं सो वह

بانی تو شوجی کے آگے عجیب غریب نہیں
ہے تو جو شوجی کی استت کرتا ہے تو تیری
بانی کس طرح عجیب و نادروگی اس واسطے
میں کہتا ہوں کہ میری عقل تو یہ بات
کہتی ہے کہ شوجی کے گونوں کو برتن کر کے اپنی
یاں کو پوتر کرتا ہوں۔ ہے پرمتن شوجی
اسوجہ سے میرا بھی استت کرنا مناسب ہے۔

اشلوک

تو ستورینگ یث تجگ دوی رچھا
یر کرکرت تری بست یستنت
کہ گن جھاس تنگ۔ اچھیا نامن
بر دمنی یا مرنی تنگ بیا کرو
شینگ بدوحت ای کے جڑ دھین۔

ٹیکا

ہے ہمارا دیو جی تمہارا جو پر تاپ ہے سو جگت کو رچھا
ہے اور جگت کی رچھا کرتا ہے اور جگت کا پال کرتا
ہے اور سب بنید و نکادھن ہے اور تین مورت جو
برجھا بشت مہیش کی ہیں ان تینوں میں جھلک
رہا ہے ایسا تمہارا پر تاپ ہے ہے ہمارا دیو سو
کرم شاستر واسطے جو جڑ دھین والے ہیں سو وہ
دیوتاؤں کی تعریف کی برائی کرتے ہیں سو وہ

جو بُرا ہی ہے اگرچہ اُنکے بُرے کرموں کی وجہ سے
بُری ہی مگر اُنکو اچھی لگتی ہے۔
اشلوک

सू. किमीहः किं कायः सख
लुकिमुपायस्त्रिभुवनं कि
माधारेधाता सृजति किमु
पादान इति च । अतर्क्यै
प्रवर्यै त्वप्यनवसुरदुःस्थो
हतधियः कुत को यकांश्चि
न मुखारयति सो हाय जग
तः ॥ ५ ॥ ५ ॥ ५ ॥ ५ ॥

मी. सो जो महादेव हैं त्रिभुवन को
सृष्टि हैं सो क्या उनकी चेष्टा है और
कैसी उनकी काया है और कैसा
उनका उपाय है और क्या उनका
जागरा है हे महादेव तुम्हारा जो म
ताप है सो तर्कना अर्थात् कहने के
योग नहीं उसमें यह तर्कना उ
गते हैं सो यह जो तर्कना है जो को
ई मन्द बुद्धि हैं तिनको मोहित
करती है अर्थात् भरमाती है जो
अच्छे लोक हैं वह नहीं भरमते हैं ॥

सू. अजन्मानो लोकाः मिमं
वयववंतोपि जगतामधि
ष्ठातारं किं भवविधिरनाह

کمی بہ کنگ کا یہ شکل کیا نیستر
جھونٹنگ کیا دھار دھار سرجت
کیا وان اچ۔ اتر کی شوری جیتی ہیں
و شردہ استخوانیت دھپہ کٹر کو
نیگ کا شجن مکہ ریت موہا کی جگتہ۔
ٹیکا

سو وہ مہادیو جی ترہیوں کو رچتے ہیں سو
کسی انکی چشٹھا ہی اور کسی انکی کایا ہی اور کسی
انکا آپا ہے اور کسی انکا آتمہ ہی۔
مہادیو جی تھارا جو پر تاپ ہی سو ترکنا یعنی
تقریر کے لائق نہیں اس میں یہ ترکنا اٹھاتے
ہیں سو یہ جو ترکنا ہی سو مند بردہ والوں کو
بوسیت کرتی ہی یعنی بھراتی ہی مگر جو اچھے
لوگ ہیں وہ نہیں بھرتے ہیں۔
اشلوک

اَجْمَانُو لُوکَاہ کُو یُو و نَک ٹوپ جگتا جگٹھا
تارنگ کنگ بھو پردہ زنا ورثیہ

اَجْمَانُو لُوکَاہ کُو یُو و نَک ٹوپ جگتا جگٹھا
تارنگ کنگ بھو پردہ زنا ورثیہ

त्यभवति । अनीशोवाकु-
र्याद्वनजननेकःपरिकरो
यतोमन्दास्त्वाप्रत्यमरवर
संशेरतदमे ॥ ६ ॥ ६ ॥

टी. हे महादेव ये जो चौरह भुवन
हैं क्या पैदा नही हुवे अर्थात् पैदा हु-
वे हैं क्या इनकी पैदायश तुम्हारे
बिना है अर्थात् तुम्ही से है क्या को
ई मनुष्य अनीश करसक्ता है जग-
त को अर्थात् ईश्वर ही करसक्ता
है और जो को ई तुम में संशय करते
हैं कि पैदायश किसी औरने कर
दी होगी सो वे बड़े मूर्ख हैं क्योंकि
ह सब तुम्हारी ही पैदा की हुई हैं ॥ ६ ॥

मू. त्रयीसारं योगः पशुप-
तिमतं वैष्णवमिति प्रभिन्ने
प्रस्थाने परमिदमदः पथ्य-
मिति च । रुचीनां वैचित्र्याद्
जुकुटिलनानापथयुषां च
णामेको गम्यस्त्वमसि प-
यसा मणीवद्भव ॥ ७ ॥ ७ ॥

टी. हे महादेव तीनों तो वेद और
प्रकृति पुरुष का निर्माण जिसमें है

بھوت - انیشو باکر یا دھجیوں جن
نیکہ پر کرو یو متا ستوا انک
پر تہ مروت سنشے رت اے -
طیک

۴
ہے ہادیو جی جو چوڑہ بھون ہیں کیا پیدا
نہیں ہوئے یعنی پیدا ہوئے ہیں کیا ان کی
پیدائش تمہارے بغیر ہی نہیں تھیں سے ہی
کیا کوئی آدمی انیش پیدا کر سکتا ہے ملک کو
یعنی ایسور ہی پیدا کر سکتا ہے اور جو کوئی
تخم میں شبہ کرتے ہیں کہ یہ پیدائش کسی اور
نے کی ہوگی سو وہ بڑے مूर्ک ہیں کیونکہ
یہ سب خلقت تمہاری ہی پیدائی ہوئی ہے -

اشلوک

۵
تری سانکھینک جو کہ پش پتر
تنگ بشتو مت پر بچے پرستھانے
پرندہ بھیم تر - رچی نانک نے
چشہ یوج گلی نانہ پتھ کیکھا نک نرنا
سیو گتہ است مس پسا مروت او -
طیک

۶
ہے ہادیو جی تینوں تو بچے اور پرکرت
پرکش کا بننے (شرح) جبین ہے

ہے اساتذہ شاस्त्र और योग शास्त्र
जिसमें योगाभ्यास है वह शास्त्र और
सुदयामलादि अर्थात् शिवजी का
मत और नारद पंचरात्र अर्थात् वि-
ष्णु का शास्त्र ये जो जुदे जुदे शास्त्र हैं
इनके बीच में अपने-अपने ब-
ताते हैं अनेक प्रकार की रुचि है
सब रास्ते सूधे और टेढ़े रास्ते वाले ब-
हुत हैं परन्तु ये सब तुम्ही में पहुँचेंगे
कोई सूधे रास्ते से कोई टेढ़े रास्ते से
जैसे जितने जल हैं सब समुद्र ही में
पहुँचने हैं कोई जल सूधे रास्ते को-
ई जल टेढ़े रास्ते को जाता है गङ्गा
और नर्मदा सूधे रास्ते होकर समु-
द्र में मिल जाती हैं और जो नदी हैं
वह टेढ़े रास्ते होकर गङ्गा यमुना में
मिलकर भी समुद्र में मिल जाती हैं
जो कोई केवल आप ही का ध्यान
करते हैं वे आप के पास पहुँच जा-
ते हैं और जो कोई और देवताओं का
ध्यान करते हैं वे सब तुम में और ज-
न्म धारण करके पहुँचते हैं ॥ ७ ॥

मू. महोदयः खड्गः परशुर-
जिनं भस्म फणिनः कपा-
लं चेत्तीयत्त वरदत्तं त्र्योप-

ایسا سائنکشیہ شاستر اور جہین جوگ ابھیس
ہی وہ شاستر اور رڈر جابل مینی شوجی کا
مت اور نار د پنچ راتر مینی بشن کا شاستر
یہ جو علیحدہ علیحدہ شاستر ہیں انکے چرچ میں اپنے
اپنے کو اچھا بتاتے ہیں انیک پر کار کی رُچ
ہی مینی سیدھے اور ٹیڑھے راستے والے بہت
ہیں مگر یہ سب اخیر کو تھیں میں پہنچنے کے کوئی
سیدھے راستے سے کوئی ٹیڑھے راستے سے
جیسے جتنے جل ہیں سب سندر ہی میں پہنچتے ہیں
کوئی جل سیدھے راستے ہو کر اور کوئی جل ٹیڑھے
راستے ہو کر جاتا ہے گنگا اور نرمدا سیدھے
راستے ہو کر سندر میں مل جاتی ہیں اور اور
جونی ہیں وہ ٹیڑھے راستے ہو کر گنگا جمن
میں ملکر سندر میں مل جاتی ہیں۔ جو لوگ
صرف آپ ہی کا دھیان کرتے ہیں وہ آپ
کے پاس سیدھے پہنچ جاتے ہیں اور جو کوئی
اور اور دیوتوں کا دھیان کرتے ہیں وہ
دوسرے جہم میں آپ کے پاس پہنچتے ہیں۔

اشلوک

مہوکشہ کھوٹا انگ گنگا پر شر جننگ جھسم
پھرنہ کیا لنگ چیتی توبر دتتر و پ

करणं सुरास्तांतामृद्विवि
दधतिमवद्भूषणहितां। न
हि स्वात्मारामं विषयमृग
तस्माभ्रमयति ॥ ८ ॥

م:۔ ہمہا دے و بڑا تو بے ل اور
سدا ڈ۔ نام ہڈیا ر جیسا مनु
ش کے ہاڈو کا پینر ایسا ہڈیا
ر ہوتا ہے اور پرش نام کھارا اور اجن
نام مرگ چھالا اور کھسم نام بھوت اور
پچھن نام سرت اور کپال آپ رکھتے ہیں
ہے پرد آگے اتنی تو ساگری ہی اور آپ
کی دولت کو سب دیوتا بھوک کرتے ہیں
ایسا آپکا پرتاپ ہی کہ ساگری آپ کی
تو غریبوں کی ایسی اور دینا یعنی عطیہ
آپ کا بے انتہا ہے۔
اشلوک

सू. ध्रुवं कश्चित्सर्व्वसक-
लमपरस्त्वध्रुवमिदं प-
रोधौ व्याधौ व्येज गतिग-
दतिव्यस्तविषये। समस्ते
प्येतस्मिन् पुरमथनतैर्वि-
स्मित इव स्तुवन जिह्वे

کرننگ۔ سراسنا تاتا مریڈھنگ بد
دھت بھو و بھو پرن پتا نگ نہ سوتا
رانگ بستی مرگ ترشنا بھر مینت
سیکا

ہے ہادیو بڑا بیل اور کھوانگ نام تھیا
(جیسا آدمی کی ہڈیوں کا پینر ایسا تھیا
ہوتا ہے) اور پرش نام کھارا اور اجن
نام مرگ چھالا اور کھسم نام بھوت اور
پچھن نام سرت اور کپال آپ رکھتے ہیں
ہے پرد آگے اتنی تو ساگری ہی اور آپ
کی دولت کو سب دیوتا بھوک کرتے ہیں
ایسا آپکا پرتاپ ہی کہ ساگری آپ کی
تو غریبوں کی ایسی اور دینا یعنی عطیہ
آپ کا بے انتہا ہے۔

اشلوک

دھر ونگ کشت سرننگ سکرم پرستو
دھر ونگ پرودھر ویا گھر ویا
جگت گرت بستی کھیے ستمیہ
قسم پرستھن تر بستی او ستون جہرے

मित्वांनखलुननुधृष्टामु
खरता ॥ ६ ॥ ६ ॥

श्री. हे शांभु शिव कोई तो इस जगत्
को कहता है कि भुव है अर्थात् स-
त्य है और कोई कहता है कि अधु-
व है अर्थात् रूढ़ा है और कोई कह-
ता है कि भुव अधुव दोनों हैं अर्थात्
तबह संसार सत्य भी है और रूढ़ा भी
है सो इन सब कहने वालों की बात
को सुनकर के बड़ा आश्चर्य मान-
ता हूँ क्योंकि कोई कुछ कहता है
और कोई कुछ सो हे शिव तुम्हारी
स्तुति करता हुआ मैं लज्जा को प्रा-
प्त होता हूँ क्योंकि मैं तुम्हारी क्या
स्तुति करूँगा जो ये बड़े बड़े कहने
वाले हैं उन्होंने तो पार पाया ही न
ही मैं तो महा तुच्छ हूँ क्या पार पा-
ऊँगा मैं जो स्तुति करता हूँ सो एक
दिगड़ सी करता हूँ दीठ वह होता है
कि छटाँक भर तो आप होवै और
सेर भर वाले की रीस करने लगै। ६।

मू. तवैश्वर्यं यत्नाद्यदुप-
रिविष्णो हरिरधः परि-
च्छेतुं याता वनलमनि-

मो आंक कमल नूनं दधृष्टा म्क-
मिका

हे शांभु शिव जो कोئی تو اس جگت کو
کہتا ہے کہ دھرو مینی سچا ہے اور کوئی کہتا ہے کہ
ادھرو مینی جھوٹا ہے اور کوئی کہتا ہے کہ دھرو
اور ادھرو دونوں ہی مینی یہ سنسار سچا
بھی ہے اور جھوٹا بھی ہے سو ان سب کہنے
والوں کی بات سنکر مجھکو بڑا تعجب ہے کیونکہ کوئی
کچھ کہتا ہے اور کوئی کچھ سو ہے شوجی آپ کی
استثت کر نہیں مجھکو لجا مینی شرم آتی ہے
کیونکہ میں آپ کی استثت کیا کروں گا در حالیکہ
بڑے بڑے کہنے والوں نے تو پار پایا ہے
میں میں تو ایک ناچیز ہوں کیا پار پاؤں گا
میں جو آپ کی استثت کرتا ہوں تو گویا ایک
گستاخی ہی کرتا ہوں گستاخ وہ ہوتا ہے کہ
جو چٹانک بھر تو آپ ہو اور سیر بھر والے
کی برابری کرنے لگو۔

اشلوک

تویشورینگ یتنا دیند پر برنجو ہر
پر چھ یتناک یا تاوئل منسل

लस्कन्धवपुषः। ततोभक्तिश्च
ह्यभारगुरुगुणान्नागिरि
शयत् स्वयंतस्थेताभ्यां
तवकिमनुवृत्तिर्नफ-

लति ॥ १० ॥ १० ॥ १० ॥

मै. हे महादेव तुम्हारे ऐश्वर्य अर्थात् प्रताप को तोलने के वास्ते बड़े बड़े यत्न करके ब्रह्मा तो ऊपर गये और ब्रह्म नीचे गये तो भी उस का अन्त न पाया जिसके वास्ते ब्रह्मा करके तुम्हारी स्तुति करने वाले जो हरि और ब्रह्मा हैं उनके वास्ते तुम आप प्रगट होने भये अर्थात् दर्शन देने भये हे शिव तुम्हारी जो अनुवृत्ति नाम सेवा है क्या नहीं फलती अर्थात् फलती है १०

मू. अथ त्वादासाद्यस्त्रिभुवन
मवैरिव्यतिकरं दशास्यो यद्वा
हूनभूतराणां काडूपारवशान्।
शिरःपद्मश्रेणीरचितचर-
णां भोरुहवलेः स्थिराया
स्त्वङ्गत्तेस्त्रिपुरहरवि-

اسکندہ پیشہ۔ تو بھکت شردھا
بھکر گر گزند بھانگ کر شیت سونگ
تسجے تا بھیانگ توک سن برتر
نہ بھکت -

ٹیکا

نہ

ہے بہادر یو جی آپ کا ایشورج یعنی جاہ و حاکم
کی انتہا دریافت کرنے کی واسطے بڑی بڑی
تدبیریں کر کے برہما جی تو اوپر گئے اور شبن
بھگو ان نیچے پاتاں میں گئے مگر تاہم انکی تہا
نہ پائی شردھا سے استت کر نیو اسے جو شبن
اور برہما جی میں انکے واسطے آپ نے پرگٹ
ہو کر درشن دیا سو سپر شوبھی انکی جو انہر
نام سنوا ہم کیا وہ بھل نہیں دیتی ہر سینے
مذہب بھل رہی ہے۔

اشلوک

ایستنا و اسادائیں تر جھون بہی ریت
گرنگ و شایوید باہون بھرت
رن کٹو پریشان - شرہ پدم
شرنی رچت برناگ بھورہ بکشیہ
استہر آیا ستود بھکتے استہر تر پریس

سُجرتِ مِرد ॥ ۱۱ ॥ ۱۱ ॥

۱۱. ہے महादेव दशानन जो रावण
 है जिसमें वैरा एक नहीं ऐसा जो
 बिलोकी का राज्य है सो उसको प्रा
 ण होकर और सदा बुद्ध करा चाहै
 ऐसी बीस मुजा कि जिसमें सर्वदा
 खज लड़ाई की उठती रहै उनको
 प्राण होता भया और अपने जो
 शिर हैं उनको कमल बना कर सा
 पको भेंट देता भया है शिव तुम्हा
 री तो भक्ति का फल खुला हुआ
 है क्योंकि देखिये कि रावण को
 कौन कौन फल मिले ॥ ११ ॥

सू. अमुष्यत्वत्सेवासमधि
 गतसारं भुजबलं बलात्कै
 लाशेपित्वदधिवसतौ वि
 क्रमयतः । अलभ्या पा
 तालेप्यलसचलितांगुष्ठ
 शिरसि प्रतिष्ठात्वय्यासी
 दुवमुपचितो मुह्यति
 खलः ॥ १२ ॥ १२ ॥ १२ ॥

१२. है महादेव तुम्हारी सेवा क
 रके पाया है भुजबल जिसने

पूजित मरिग -

॥

॥ ॥
 ہے مہادیو جی دستان جہراون ہر اسکو
 آپ ہی کی کرپا سے تیون لوک کا راج ایسا
 بلا کہ جہین دشمن ایک بھی نہیں اور اسی
 راون کو بیس بھجاء ایسے ملے کہ جو ہمیشہ لڑنا
 چاہیں اور بغیر لڑائی کے انہیں کھجلی اٹھا
 کرتی تھی ایسا جہراون ہر اسنے اپنے
 سرو کا مکمل بنا کر آپ کے نذر کیا اس سے
 ہے شوجی آپ کی مٹھا کا پھل طاہر ہر کیونکہ
 راون کو کون کون پھل نہیں ملے۔

اشلوک

۱۲
 انگھیہ توٹ سیوا سہم گت سارنگ
 بھج بنگ بلات کیلا شے پتو دودھ
 بستو بکر میتہ - البھیا پاتا لپلیس
 چلتا نکشت شرس پر تشٹھا تو یا سی
 دھو مپ چٹو موہ جت کھلہ -

۱۲

۱۲
 ہے شوجی ابکی سیوا کر کے پایا ہر بھج بل جسے

ایسا جو راؤن ہی اُسکی عزت پاتاں میں جاتی
 رہی اس وجہ سے کہ آپ کے رہنے کی جگہ
 جو کیلاش پر بت ہی اُس کیلاش کے اٹھارے
 کے واسطے ایک دن راؤن نے اُسکی جڑیں
 اپنا ہاتھ دے دیا جب اُسکے ہاتھ دینے سے
 پر بت ہلنے لگا تب آپ نے اپنے اپنے
 پانوں کا انگوٹھا ہلا دیا تب راؤن کا ہاتھ
 وہیں دب کر رہ گیا اُسوقت جتنے لوگ
 پاتاں کے رہنے والے تھے سب ہنسنے لگے
 اور راؤن سے کہنے لگے اگر تجھے اپنا ہاتھ بھی
 کالے نہیں بخل سکتا تو پھر کس واسطے اپنا
 ہاتھ کیلاش پر بت کی جڑ میں دیا تھا ارض
 اسطرح راؤن کی عزت پاتاں میں بگڑ گئی۔

اشلوک

मू. यहृद्धिं सुत्राम्णो वर
 दपरमोच्चैरपि सती मध
 श्रक्रे बाणः परिजनविधे
 यत्रिभुवनः। नतच्चिंत
 स्मिन्वरिवसितरित्वच्च
 रणयोर्न कस्याप्युन्नत्यै

۱۴
 یدر وھنگ سو ترا مؤبر و پر مو
 چیمی رب سستی مدھش چکرے بانہ
 پر جن بدھے یتر جھونہ -
 نہ تہ چترنگ تسمن بر بس
 زتوت چر نیو کسٹیا پین سنئے

भवति शिरसस्त्वप्यव-

नतिः ॥ १३ ॥ १३ ॥

टी. हे महादेव निश्चय करके ज्ञा-
नता हूँ कि जो मनुष्य समर्थवान्
अर्थात् धनवान् होता है वह अ-
न्या हो जाता है ॥ १३ ॥ १३ ॥

मू. अकाण्ड ब्रह्माण्डस-

यचकित देवा सुररूपा

विधेयस्यासीद्यस्त्रिनय-

नविषं संहतवतः । सक-

ल्माषः काठितवनकुरुते

नश्रियमहो वि कारोपि

श्लाघ्यो भुवनभयभंग

व्यसनिनः ॥ १४ ॥ १४ ॥

टी. हे महादेव विष के पीने वा-

ले जो तुम हो तुम्हारे काठ में जो

स्याही हो गई है क्या वह शोभा

नहीं देती अर्थात् बहुत अच्छी

लगती है क्योंकि बिना समय प्र-

लय आई थी उससे असुर और

देवता दोनों डरे उनको तुमने ब-

चाया इसवासे वह जो स्याही

बहुत शरसस्तोयिष्मते -

टिका

१५
हे महादय मिन यत्निता जानता हों कि जो شخص

सबब قدرت و دولتمند होता है वह गोया

अन्धहा भो जाता है -

अश्लोक

१५
अकान्द ब्रह्माण्ड कश्चिदुवासर

करि पादरे स्यासि सितरनिनिकेन

शकृत वते - सकल माकह कश्चिदुवासर

करते न शरीर म्भोजारोपि लाहो

बहोन भी ज्जन्त बिसन्ने -

टिका

१५
हे महादय म्भोजारोपि लाहो

मिन सवाप के गले मिन जो स्याही भोगी

भी किया वह शोभा से खाली है म्भोजारोपि

अभी लगी है किन्तु बड़े वक्त जो प्रली

मिनी यिमत आती त्ही अस् से सब अस्

और दियो ता लो ग दू र गे त्हे चान्छे अकन

अपने बचाया अस् से वह जो स्याही

विष की है वह बहुत ही शोभा दे
रही है हे महादेव जो पराये दुःख
को मिटाते हैं उनका अवगुण
भी गुण है ॥ १४ ॥ १४ ॥

मू. असिद्धार्या नैव कचि-
दपि स देवासुरनरे निवर्त्त-
न्ते नित्यं जगति जयिनो
यस्य विशिखाः । स पश्य-
न्तीशत्वा मितरसुरसाधा-
रणमभूत् स्मरः स्मर्त्तव्या
त्मानहि वशिष्ठपथ्यः प-
रिभवः ॥ १५ ॥ १५ ॥

श्री. हे महादेव जिस कामदेव
के बाण जगत में खाली फिरके
नहीं आते सबको जीत कर आ-
ते हैं सो कामदेव तुमको भी और
देवताओं के माफिक देवताहु
आदम्भ हो गया हे महादेव अ-
च्छे पुरुषों का आदर न करना अ-
च्छा नहीं जो आदर नहीं करते
हैं उनका हाल कामदेव का
सा होता है ॥ १५ ॥ १५ ॥ १५ ॥

मू. महीपादाघाताद्भज-

नहर की मीठी देह आप के कंठ में बस
शुभवाद से रही मीठी
जो प्रिया दूध मिलाते हैं अन्ना और नमकी
अश्लोक

१५
असद्वारं त्वान्यो कोचो पदो वासर
नरैः नो रत्नैः तृणैः जलैः जिनो
यस्य विशिखाः - स पश्य-
न्तीशत्वा मितरसुरसाधा-
रणमभूत् स्मरः स्मर्त्तव्या
त्मानहि वशिष्ठपथ्यः प-
रिभवः ॥ १५ ॥ १५ ॥ १५ ॥

१५
हे महादेव जिस कामदेव के बाण
से खाली पहर कर नैन आते मीठी
आते हैं सो कामदेव तुमको भी और
देवताओं के माफिक देवताहु
आदम्भ हो गया हे महादेव अ-
च्छे पुरुषों का आदर न करना अ-
च्छा नहीं जो आदर नहीं करते
हैं उनका हाल कामदेव का
सा होता है ॥ १५ ॥ १५ ॥ १५ ॥

१५
महीपादाघाताद्भज-

मू. रथः क्षोणीयं तागत धृति
रगेन्द्रो धनु रथो रथाङ्गे च
न्द्रा कीरिथ चरणपाणिः शर
इति । दिधक्षोस्ते कोयं वि
पुरातृणमाडं वरविधिर्वि
धैः क्रीडंत्यो नखलु परतं
त्राः प्रभुधियः ॥ १८ ॥

सी. हे महादेव पृथ्वी को नुमने
रथ बनाया और हॉकने वाला
ब्रह्मा बनाया और हिमाचल
पर्वत को धनुष बनाया और
चन्द्र सूर्य को रथ के पहिये ब-
नाये और विष्णु को तीर बना-
या त्रिपुरदित्य घास के तिनके
के बराबर उसके फूंकने के वा-
ले इतनी बड़ी सामग्री वह तो
केवल तुम्हारी दृष्टि मात्र से द-
ग्ध होसक्ता था परन्तु बड़े लो-
ग जो होते हैं उनकी खुशी में
जो जाता है वही करते हैं ॥ १८ ॥

मू. हरिस्ते साहसं क
मल बलिमा धाय पद

अश्लोक
रथे कश्चिन्मिताशतं दधत् रक्षितं
दधत् रथं रथाङ्गे चन्द्राङ्गे रथो
चरन् बाने शरातः - दधत् रथं
रथे कश्चिन्मिताशतं दधत् रक्षितं
दधत् रथं रथाङ्गे चन्द्राङ्गे रथो
चरन् बाने शरातः - दधत् रथं
रथे कश्चिन्मिताशतं दधत् रक्षितं
दधत् रथं रथाङ्गे चन्द्राङ्गे रथो
चरन् बाने शरातः - दधत् रथं

मिका
है मादियोजी परमेश्वर को तो आपने रथ
बनाया और नाकने वाला अस्त्र बनाया और
रथ चलने पर रथ को दधत् बनाया और चन्द्र
और सूर्य को रथ के पहिये बनाये
और विष्णु को तीर बनाया त्रिपुरदित्य के
तिनके के बराबर अस्त्र के फूंकने के वा-
स्ते ब्रह्मा बनाया और हिमाचल पर्वत को
धनुष बनाया और चन्द्र सूर्य को रथ के
पहिये बनाये और विष्णु को तीर बना-
या त्रिपुरदित्य घास के तिनके के बराबर
उसके फूंकने के वाले इतनी बड़ी सामग्री
वह तो केवल तुम्हारी दृष्टि मात्र से दग्ध
होसक्ता था परन्तु बड़े लोग जो होते हैं
उनकी खुशी में जो जाता है वही करते हैं -

अश्लोक

१९
रथे कश्चिन्मिताशतं दधत् रक्षितं
दधत् रथं रथाङ्गे चन्द्राङ्गे रथो
चरन् बाने शरातः - दधत् रथं

शोर्यदे कोने तस्मिन्नि-
जमुदहरन्नेत्रकमल ।
गतो भक्त्युदेकः परिण-
तिमसौ चक्रवपुषा त्रया-
णां रक्षायै त्रिपुरहरजाग-
र्त्तिजगतां ॥ १६ ॥ १६ ॥

टी. हे महादेव विष्णु जो हैं तुम-
को हजार कमल रोज चढ़ाया कर-
ते हैं उनकी परीक्षा लेने के वास्ते
एक पुष्प को ले लिया क्योंकि दे-
खें कि इनका नेम कैसा है नव वि-
ष्णु ने देखा कि हमारा हमेशा का
नेम दूरा अब क्या करना चाहि-
ये खैर अपना एक नेत्र ही चढ़ा
कर अपना नेम पूरा हजार क-
मल का कर देंगे तब विष्णु की
ऐसी बड़ी भक्ति को देखकर तुम
ने त्रिलोकी की रक्षा करने के वा-
स्ते सुदर्शन चक्र विष्णु को दिया
तो वह जो चक्र है आज तक वि-
ष्णु के हाथ में वर्तमान है ॥ १६ ॥

मू. क्रतौ सुप्रे जायत्वमसि
फलयोगे क्रतुमतां क-
कर्मप्रध्वस्तं फलति

योर्यदे कोने तस्मिन्नि-
जमुदहरन्नेत्रकमल ।
गतो भक्त्युदेकः परिण-
तिमसौ चक्रवपुषा त्रया-
णां रक्षायै त्रिपुरहरजाग-
र्त्तिजगतां ॥ १६ ॥ १६ ॥

है महाद्विज भिक्षु जगतां आप को नारा
पहल कल के हर रोज नेम कर के चढ़ाया
करते हैं भिक्षु आप ने भिक्षु जगतां
का अस्मान लिये कियो अस्मान को
नकाल रखा अस्मान के अस्मान को
के दिखिन अस्मान कि सा हर भिक्षु जगतां
ने एक पहल कम दिखकर सुचा के सा हमेशा
का नेम ठोठा जाता है अब कि करना चाहे खिरा
अस्मान भिक्षु अस्मान को बहुरत कल के हर चढ़ाकर
अस्मान नेम नारा कल का पुरा कर दिखे तब आप ने
अस्मान बुरी बहुरत दिखकर एक सुदर्शन चक्र द-
माधुरत तिन लोको को अस्मान दया जो अस्मान को दया
अस्मान

कर तो सुप्रे जायत्वमसि
फलयोगे क्रतुमतां क-
कर्मप्रध्वस्तं फलति

पुरुषाराधनमृते । अत-
स्त्वांसंप्रेक्ष्य क्रतुषु फल-
दानप्रतिभुवंशुतौ अहां
बध्वा दृढपरिकरः कर्म-
सुजनः ॥ २० ॥ २० ॥

री. हे महादेव जब यज्ञ पूरा हो-
जाता है तब यज्ञ करने वालों को
फल तुम्हीं देते हो और तुम्हा-
री सेवा के बिना जो कर्म पूरा
होगया सो फल नहीं दे सकता इ-
स वास्ते जितने कर्म करने वा-
ले हैं वह सब तुमको देख कर
और यह समझ कर कि शिव-
जी सब कर्मों के फल देने वा-
ले वर्तमान बैठे हैं अपने अप-
ने कर्मों के करने में प्रवृत्त हो
रहे हैं ॥ २० ॥ २० ॥ २० ॥

मू. क्रियादक्षो दक्षः क्र-
तुपतिरधीशस्तनुभृता
मृषीणां मार्त्विज्यशरण
दसदस्याः सुरगणाः । क्र-
तुभ्रंशस्त्वत्तः क्रतुषु
फलदानव्यसनिनौ

परिश्रमादहन मरते -
अश्वाङ्क शङ्क प्रयिक्षि कर्त्तु
पह्ले अन प्रत बहोङ्क श्चरतु
श्रुत हाङ्क बद्द हवा दृष्ट प्रकरे
कर्म सज्जे -

टिका

१. हे महादेव जब यज्ञ पूरा हो-
जाता है तब यज्ञ करने वालों को
फल तुम्हीं देते हो और तुम्हा-
री सेवा के बिना जो कर्म पूरा
होगया सो फल नहीं दे सकता इ-
स वास्ते जितने कर्म करने वा-
ले हैं वह सब तुमको देख कर
और यह समझ कर कि शिव-
जी सब कर्मों के फल देने वा-
ले वर्तमान बैठे हैं अपने अप-
ने कर्मों के करने में प्रवृत्त हो
रहे हैं ॥ २० ॥ २० ॥ २० ॥

अश्लोक

क्रियादक्षो दक्षः क्र-
तुपतिरधीशस्तनुभृता
मृषीणां मार्त्विज्यशरण
दसदस्याः सुरगणाः । क्र-
तुभ्रंशस्त्वत्तः क्रतुषु
फलदानव्यसनिनौ

ध्रुवं कर्तुः श्रद्धावि-
धुरमभिचाराय हिम-
खाः ॥ २१ ॥ २१ ॥ २१ ॥

श्री. हे महादेव यज्ञ करने वाला
तो दक्ष तो कैसा दक्ष कि कर्म क-
रने में बड़ा बुद्धिमान और यज्ञ क-
रने वाले ऋषीश्वर और यज्ञ के
सहायक सब देवता परन्तु उस द-
क्ष की तुम्हीं में श्रद्धा नहीं इतनी
ही कसर थी सो यज्ञ भ्रष्ट हो गया उ-
सके यहाँ सब कुछ था परन्तु केवल
तुम्हारी रूपा नहीं इससे उसका य-
ज्ञ बिध्वंस हो गया क्योंकि यज्ञ
के फल देने वाले तो तुम्हीं ही सो तु-
म्हीं में उसकी श्रद्धा न हो तो वह य-
ज्ञ कहां से सम्पूर्ण हो यज्ञ करने वा-
ला भी बहुत अच्छा था और यज्ञ
करने वाले भी बहुत अच्छे थे परन्तु
तुम्हारी रूपा बिना कुछ किसी से न
हो सका यज्ञ भ्रष्ट हो गया ॥ २१ ॥

मृ. प्रजानाथं नाथप्रसभ
मभिकं स्वां दुहितरंगतरे
हिङ्गतां रिमयिषु मृष्यस्य
वपुषा । धनुष्याणो र्यातं दि-

द्वेष्टकं कर्तुं श्रद्धावि-
धुरमभिचाराय हिम-
खाः ॥ २१ ॥ २१ ॥ २१ ॥

॥
ये महादेव यज्ञ करने वाला तो दक्ष तो दक्ष
कि कर्म करने में बड़ा बुद्धिमान और यज्ञ क-
रने वाले ऋषीश्वर और यज्ञ के
सहायक सब देवता परन्तु उस द-
क्ष की तुम्हीं में श्रद्धा नहीं इतनी
ही कसर थी सो यज्ञ भ्रष्ट हो गया उ-
सके यहाँ सब कुछ था परन्तु केवल
तुम्हारी रूपा नहीं इससे उसका य-
ज्ञ बिध्वंस हो गया क्योंकि यज्ञ
के फल देने वाले तो तुम्हीं ही सो तु-
म्हीं में उसकी श्रद्धा न हो तो वह य-
ज्ञ कहां से सम्पूर्ण हो यज्ञ करने वा-
ला भी बहुत अच्छा था और यज्ञ
करने वाले भी बहुत अच्छे थे परन्तु
तुम्हारी रूपा बिना कुछ किसी से न
हो सका यज्ञ भ्रष्ट हो गया ॥ २१ ॥

अश्लोक

॥
प्रजानाथं नाथप्रसभ
मभिकं स्वां दुहितरंगतरे
हिङ्गतां रिमयिषु मृष्यस्य
वपुषा । धनुष्याणो र्यातं दि-

वमपिसपत्राकृतमसुं च
संतं तेद्यापित्यजतिनमृ
गव्याधरभसः ॥ २२ ॥

दी. हे नाथ तुम्हारा जो बाण है
सो ब्रह्मा को आज तक नहीं छोड़
ता कैसा ब्रह्मा है कि अपने शरीर
को त्याग कर और हिरण के शरीर
को धारण करके आकाश में जा
बैठा और फिर कैसा है कि कामदेव
जिसको बाधा कर रहा है और फिर
कैसा है कि अपनी जो बेटी है उस
के साथ रमण करने की इच्छा है
जिसकी कैसी बेटी है कि वास्ते
बचने के हिरनी का स्वरूप धारण
कर लिया है जिसने और ब्रह्मा भी
कैसा है कि उसके साथ रमण कर
ने को हिरन हो गया और कहने
लगा कि जो तू हिरनी होगई है
तो मैं भी हिरन हो कर तुम को प्रा
प्त हो जाऊँगा ऐसी इच्छा है जिस
की तब हिरनी आकाश की ओर
देख कर कहने लगी कि कोई ऊप
र है या नहीं है नाथ तुम कैसे हो
कि धनुष है हाथ में जिनके और
ब्रह्मा कैसा है कि महादेव का तीर

دومپ سپتر اكرت ممتك
ترسنگ تنگ تير ياب تجت
نمرگ بيا دهر جسته -

طیكا

۱۲۰
ہے ناتھ تمھارا جو بان یعنی تیر ہی سو تیر
کو آج کت دق کر رہا ہے مینی ایک دن
کا ذکر ہے کہ بر مجاہی نے اپنا اصلی شیر
(جسم) تیلک کر کے ہرن کا شیر بدھا
کر کے آسمان پر جا بیٹھے سبب اسکا یہ
تھا کہ بر مجاہی کو کامیوں نے بہت ستایا تھا
جبکی وجہ سے بر مجاہی نے اپنی بیٹی ستمہ
سندھیا سے جماع کرنا چاہا تھا جب بیٹی نے
اپنے بچنے کے واسطے ہرن کا شیر بدھا
کر لیا تب بر مجاہی ہرن کا شیر بدھا کر کے
بیٹی سے کہنے لگے کہ اگر تو ہرنی ہو گئی ہے تو
میں بھی ہرن ہو کر تیرے ساتھ ضرور جماع
کر ونگا تب ہرنی سب طرح سے مجبور ہو کر
آسمان کی طرف منہ اٹھا کر کہنے لگی کہ کوئی
اوپر ہے یا نہیں ہے مہادیو جی تم کیسے ہو کہ دھنکھ
باتھنیں ہو چکے اور بر مجاہی نے یہ کہ مہادیو جی کا تیر

ऐसे खोटे कर्म करने की इच्छा रखने वाले के शरीर को फोड़कर साफ निकल गया और फिर कैसा है कि चास को प्राप्त हो रहा है तो भी तुम्हारा बाण आज तक उसके पीछे लग रहा है हे महादेव ब्रह्मा को तो आज तक तुम ऐसे नजर आते हो कि मानों शिवजी मेरे पीछे तीर लिये खड़े हैं सो हे शिव सन्ध्या नाम करके ब्रह्मा की जो बेटी है उसकी गुहार सुनकर तुमने यह सजा ब्रह्मा को दी ॥ २२ ॥ २२ ॥

मू. स्वलावणयाशंसाधु-
तधनुषमन्हायतृणाव-
तपुरःसुष्टं दृष्ट्वा पुरमय-
नपुष्पायुधमपि । य-
दिस्त्रीणां देवी यमनिरत-
दिहार्द्धघटनादवैतित्वा
मद्वावतवरदमुग्धायु-
वतयः ॥ २३ ॥ २३ ॥

टी. हे महादेव देवी जो पार्वती हैं तुमको आधे अङ्ग में वैगने से ब-
ह जानती हैं कि शिवजी का भी

ऐसे क्यूँ कर्म की अच्छा कर न्याये ब्रह्मा के
बदन को तोड़ कर पार भूल गया जिस से ब्रह्माजी
कहल रहा है मैं तुम्हारा बाण आज तक ब्रह्मा के
पीछे लगे रह रहा है मया दियो ब्रह्मा को आज तक
तुम ऐसे नजर आते हो कि गویा शत्रुजी मेरे
पीछे तीर लिये खड़े हैं सो हे
शत्रुजी सन्ध्या नाम ब्रह्मा की बेटी की फ़र्याद
आपने सुनकर यह सजा ब्रह्मा को दी -

अश्लोक

सुलोलोत्पिशादधरत दृष्ट्वा
मन्हायतृणावतपुरःसुष्टं दृष्ट्वा
पुरमयनपुष्पायुधमपि । य-
दिस्त्रीणां देवी यमनिरत-
दिहार्द्धघटनादवैतित्वा
मद्वावतवरदमुग्धायु-
वतयः ॥ २३ ॥ २३ ॥

श्लोक

टी. हे महादेव देवी जो पार्वती हैं तुमको आधे अङ्ग में वैगने से ब-
ह जानती हैं कि शिवजी का भी

अमङ्गल्यं शीलं तव भव-
तु नामैव मखिलं तथा-
पि स्मर्तृणां वरद परमं मं-
गल मसि ॥ २४ ॥ २४ ॥

टी. हे महादेव मसान में तो आ-
पका रहना और पिशाच तुम्हा-
री फौज में रहते हैं और चित्तों
भस्म को लगाते हैं और भक्तों
के मुण्डों की माला गले में पहर-
ते हैं यह जितना आपका साज
है जो देखने में मंगल नहीं है प-
रन्तु जो तुम्हारे नाम लेने वाले हैं
उन को यह साज परम मंगल
हो जाता है ॥ २४ ॥ २४ ॥ २४ ॥

मू. मनः प्रत्यक्षिते सविध-
मविधायानमरुतः प्रहृष्य-
द्रोमाणाः प्रमदसलिलोत्सं-
गितदृशः । यदालोक्याह्ला-
दं हृदइव निमज्ज्यामृतमये-
दधत्यन्तस्तत्त्वं किमपि य-
मिनस्तत्किल भवान् ॥ २५ ॥

टी. हे महादेव योगी लोग मन
को समाधि में लगाकर जौनसे

اشکلینگ شیلنگ تو جوت نامیو
کھلنگ تختاپ اسم تری
برو پر شنگ سنگل مس -

طیقا

۱۲
ہے مہادیو جی مسان میں تو آچکا رہنا اور
اور فوج اپنی پشا چون کی ہر اور چٹا کی
بجسم کو آپ لگاتے ہیں اور بھکتوں کے منڈ
کی مالا آپ پہنتے ہیں یہ سب ساج آپکا اگرچہ
دیکھنے میں مبارک نہیں ہے لیکن جو آپ کے
نام لینے والے ہیں انکو یہ ساج نہایت
مبارک ہو جاتا ہے -

اشلوک

۲۵
منہ برتیک چتے سبدہ مہا حایت
ممرتہ پر ہر کھیہ درو مانہ پر مد سلکوت
سنگت دیشہ - یدا لویا ملا داک
برو او نمجیا مروت میہ دوہشیت
تو نگ کمپ نیم نشت کل جھوان -

طیقا

۲۵
ہے مہادیو جی جوگی لوگ میں کو سادہ میں لگا کر

تत्व को देखते हैं वह तत्व तुम्ही
हौ योगीजन कैसे हैं कि रोक लि-
ये है पवन जिन्होंने फिर कैसे हैं
कि आनन्द के जल में भीग रहे हैं
नेत्र जिनके फिर कैसे हैं कि आ-
नन्द के समुद्र में गोता मार रहे हैं

मू. त्वमर्कस्त्वं सोमस्त्व
मसि पवनस्त्वं हुत वह-
स्त्व मा पस्त्वं व्योमस्त्वम
धरणि रात्मा त्वमिति च।
परिच्छिन्नामेवं त्वयि परि-
णता विभ्रति गिरं न विद्म
स्तत्तत्त्वं वयमिह हियत्त्वं
न भवसि ॥ २६ ॥ २६ ॥

दी. हे महादेव तुम्ही तो सूर्य हो
और तुम्ही चन्द्रमा हो और तुम्ही
पवन हो और तुम्ही अग्नि हो तु-
म्ही जल हो तुम्ही आकाश हो तु-
म्ही पृथ्वी हो तुम्ही आत्मा हो य-
ह तुम्हारी सब मूर्ति हैं खैर कहने
वालों ने यह गिनती करके कहा
तो कहा करी परन्तु मेरी बुद्धि में
तो यह आता है कि जो चीज है

تو کو دیکھتے ہیں وہ تھو تھی ہو جو کی روک
کیسے ہیں کہ جنھوں نے ہوا کو روک لیا
ی اور پھر کیسے ہیں کہ آند کے جل میں
بھیک رہے ہیں نیترا (آنکھیں) جکے
اور کیسے ہیں کہ آند کے سمدر میں غوطہ
مار رہے ہیں -

اشلوک
تو مگر کستونگ سو مں تو مں نئس
تو ننگ ہمت بہن تو ما پس تو ننگ
یو ستوم دھرن راتما تو مہج -
پر چھٹا میونگ تو ی پر نیا بھرت
گرنگ نہ بد م استت تو ننگ بڑہ
ہیت تو ننگ نہ بھوس -

ٹیکا
ہے ہما دیو جی تھی تو سورج ہو اور تھی
چند رہا اور تھی یون بینی ہوا اور تھی
اگن اور تھی جل اور تھی آکاش اور تھی
پر تھی اور تھی آتما ہو یہ سب تمھاری موت
میں غیر کہنے والوں نے یہ گنتی کر کے کہا سو کہا
مگر میری بدھ میں تو یہ آتا ہے کہ جو چیز ہے

اور اس میں تم نہیں ہو تو وہ چیز ہی نہیں ہے
یعنی جتنی چیزیں ہیں سب تم ہی ہو تمہارا
روپ سے باہر کوئی چیز نہیں ہے۔
اشلوک ۲۷

मू. चयीं त्रिस्रो वृत्तीस्त्रि-
भुवनमथो चीनपिसुरा-
नकाराद्यैर्वर्णैस्त्रिभिर-
भिदधतीर्णविकृति। तु-
रीयन्तेधामध्वनिभिरव-
रुंधानमणुभिः समस्तं
व्यस्तं त्वांशरादगूणात्यो-
मिति पदं ॥ २७ ॥ २७ ॥

دی۔ ہے شیبہ اوںکار جو اکر ہے سو
تینوں ماترا اکر اکر مکار
میل کر اور جدا جدا بھی ہو کر
تمہی کو گاتا ہے کجا ان ماتراؤں
کا اکر ہے کہ تین تو وید اور
تین ورتی اکر اکر جاگرت سوسو
پوہی اور تینوں لوک اور تینوں
دیتا اکر اکر براہما ویشو مہش
فیر کتا ہے یہ اوںکار کہ باری
ک باریک جو اپنی دھنی ہے

ترتیباً ترسرو برتیس تر جوں
ستھو تری پ تر انکار ادر برتی
انتر بھر بھر دھتیر ان بکرت -
تری ینتے وھامدھون بھر برنگ
دھان من بھر سمستنگ بیستنگ
توانگ شرنند گر نا تو میت پدنگ -

ٹیکا

۲۷
ہے شیبہ اوںکار جو اکر ہے سو تینوں ماترا
اگر اکر مکار ملکر اور جدا جدا بھی ہو کر
کہ گاتا ہے کیا ان ماتراؤں کا اکر ہے کہ تین
برت اور تین برت یعنی جاگرت اور سوسو
سکھت اور تینوں لوک اور تینوں دیتا
برہما ویشو مہش پھر کیسا ہے یہ اوںکار
کہ باریک باریک جو اسکی دھن ہے

या तजो शब्द शरीर में है उस शब्द करके तुम्हारे ही धाम को कहता है और फिर कैसा है कि विचार अर्थात् माया से परे है ॥ २७ ॥

मू. भवशर्वो रुद्रः पशुपति
रथोग्रः सहमहांस्तथा भीम
शानावितियदभिधानाष्ट
कमिदं । अमुष्मिन्प्रत्येकं
प्रविचरति देवश्रुतिरपि प्रि
यायास्मै धाम्ने प्रणिहितन
मस्योस्मि भवते ॥ २८ ॥

टी. हे शिव तुम्हारे जो छंदे हुवे ना-
म हैं वह कौन से हैं भवशर्व, रुद्र,
पशुपति, उग्र, महान, भीम, ईशा-
न, ये आठ नाम हैं इनमें सदा वेद
भी विचरता है अर्थात् गावता है
यह जो तुम्हारा धाम है नामरूपी
में भी इसको सदा नमस्कार करता
हूँ ॥ २८ ॥ २८ ॥ २८ ॥ २८ ॥

मू. नमो नेदिष्टाय प्रियद
वदविष्टाय च नमो नमः
नोदिष्टाय स्मरहरमहि-
ष्टाय च नमः । नमो वर्षिष्टाय

नाम जो शब्द शरीर में है उस शब्द करके
तुम्हारे ही धाम को कहता है और फिर कैसा है कि विचार
अर्थात् माया से परे है ॥ २७ ॥

अश्लोक

बहो शर्वो रुद्रः पशुपति
रथोग्रः सहमहांस्तथा भीम
शानावितियदभिधानाष्ट
कमिदं । अमुष्मिन्प्रत्येकं
प्रविचरति देवश्रुतिरपि प्रि
यायास्मै धाम्ने प्रणिहितन
मस्योस्मि भवते ॥ २८ ॥

टी. हे शिव तुम्हारे जो छंदे हुवे ना-
म हैं वह कौन से हैं भवशर्व, रुद्र,
पशुपति, उग्र, महान, भीम, ईशा-
न, ये आठ नाम हैं इनमें सदा वेद
भी विचरता है अर्थात् गावता है
यह जो तुम्हारा धाम है नामरूपी
में भी इसको सदा नमस्कार करता
हूँ ॥ २८ ॥ २८ ॥ २८ ॥ २८ ॥

अश्लोक

नमो नेदिष्टाय प्रियद
वदविष्टाय च नमो नमः
नोदिष्टाय स्मरहरमहि-
ष्टाय च नमः । नमो वर्षिष्टाय

دینے والے تم ہو مگر میرا مسکار ہی اور بڑا
ہی استھان تمہارا ایسے جو تم تینوں گنوں
سے باہر ہو مگر میرا مسکار ہی۔

اشلوک

مू. कृशपरिणतिचेतः
क्लेशवश्यं कचेदं कच
तव गुणसीमोल्लङ्घि-
नीशश्वदृष्टिः। इतिच
कितममंदी कृत्यमांभ
क्तिराधादरदचरणयो
स्तेवाक्यपुष्पोपहारं। ३१।

टी. हे महादेव मेरी जो भक्ति है
(वाक्य पुष्पोपहारम्) अर्थात्
वचन रूपी जो पुष्पों की माला है
तुम्हारे चरणों में चढ़ाती भई कि
मेरा कृशित चित्त कहाँ और
शिवजी का ऐश्वर्य अर्थात् प्र-
ताप कहाँ इस भय में मेरा जो
चित्त दुखी हो रहा है उसको
आनन्द अर्थात् सावधान कर
के चढ़ाती भई ॥ ३१ ॥ ३१ ॥

मू. असितगिरिसमंस्था
त्कज्जलं सिन्धुपात्रे सुर

گرش پرنت چیتہ کلش تشنگ
کو چیدنگ کو چو گن سیول لنگھنی
ششو بر دھ۔ ات چکتم مندی
کرتیہ مانگ بھکت را دھا دبر و چو
ستے باکتی ششو بہارنگ۔

ملیکا

۳۱
ہے مہادیو جی میری جو بھکت ہے سو (باکتیہ
پیشو بہارم) یعنی بچن روپی جو پیشوں کی
مالا ہے سو تمہارے چرنوں میں چڑھاتی ہے
کمان میرا ضعیف دل اور کمان شو جی کا
بلند مرتبہ اس پس و پیش میں میرا دل جو
حیران ہو رہا ہے اسکو ساودھان کر کے چڑھاتی ہے۔

اشلوک

است گر مسیات بگنگ
سندھ پا ترے سر

तरुवर शाखालेखनीप-
त्रमुर्वी । लिखतियदिगु-
हीत्वाशारदासर्वकालंत-
दपितवगुणनामीशपारं
नयाति ॥ ३२ ॥ ३२ ॥

टी. हे महादेव जितने काले प-
र्वत हैं वह तो हुवे सियाही
और समुद्र हुआ पात्र अर्थात्
दवात और कल्प वृक्ष का वह
ना हुआ लेखनी अर्थात् कल-
म और पृथ्वी हुई कागज और
तरुस्वती आप बैठी लिखनेवा-
ली सो कैसी कि सम्पूर्ण दिन रा-
त लिखती रही परन्तु तुम्हारे
गुणों का जन्म न मिला ॥ ३२ ॥

मू. असुरसुरमुनीन्द्रैर्वि-
तस्येदुमौलेग्रथितगुणाम-
हिम्नोनिगुणस्येश्वरस्य ।
सकलगुणवरिष्ठः पुष्पदन्ता
भिधानो रुचिरमलघुवृत्तैः
स्तोत्रमेतच्चकार ॥ ३३ ॥

टी. हे महादेव असुर और

शत्रु और शाखा लिखनी पत्र मुर्वी -
लکھت ید گری تو اشاره و اشارت
سرت کالنگ نزد تو گن نامیش
پازنگ نجات -

طیقا

۳۲

ہے مادیو جی جتنے کالے پر بت ہیں وہ تو
ہوئے سیاہی اور سمندر ہوا پاتری یعنی دوا
اور کلب پر چھ کاٹنا ہوا لیکن یعنی قلم اور
پر تھوی ہوئی کاغذ اور ترشوتی دیسی آپ
بیٹھی لکھنے والی سوکس طرح کہ تمام دن
اور رات لکھنے لگی مگر پھر بھی تمہارے
گنوں کا انت نہ ملا -

اشلوک

۳۳

اسم سرمنیندری ررجیت سیند
مولیر گر تھت گن مہسوز گنسیہ
شورسیہ - کل گن برشتہ لیشپ
ونما بعدھانورچر ملکہ برتہ
استوترمے تت چکار -

طیقا

۳۳

ہے مادیو جی آپ کو اسم اور

دےوتا اؤر من لوگون نے پوجا اور آپکی
استوت کی ایسے جواب برگن ایشور من آپکی
استوت بڑے بڑے اشلو کون میں پیشیتا
چارج کرتا ہی کیسا ہی پیشیت کہ اس استوت
کے پر بھاو سے سب گنوں کی شو بھا کو پریت ہوا۔

اشلوک

مू. अहरहरनवद्यं धूर्ज
देः स्तोत्रमेतत्पठति पर-
मभक्त्या शुद्धचित्तः पुमा-
न्यः। स भवति शिवलोके
रुद्रतुल्य सदात्मा प्रचु-
रतरधनायुः पुत्रवान्
कीर्त्तिमांश्च ॥ ३४ ॥

टी. हे भक्तो यह जो मैंने शिव
जी का स्तोत्र बनाया है सो यह
प्रतिदिन शिवजी के सुनाने के
योग्य है जो कोइ इसको परमभ-
क्ति करके और शुद्धचित्त करके
पाठ करेगा तो वह शिवलोक को
जायगा और शिवजी खास उ-
सको अपने बराबर समझे गे और
बहुत धन होगा और जगत में

آہر ہر نو دینک دھور جیئہ استوت
دے تہ پٹت پر م بھکتیا شدہ
چتہ پائتہ۔ سبھوت شو کو کے
رڈر تکیہ سدا اٹما پر چر تر دھنایہ
پتر وان کیرت مانسج -
ٹیکا

۳۲
ہے بھکتو یہ جو میں نے شو جی کا استوت
بنایا ہے سو یہ روز روز شو جی کے سننے
کے لائق ہے جو کوئی اس استوت کو پر م
بھکت سے اور چتہ کو شدہ کر کے
پڑھیکا وہ شو لوگ کو جائیکا اور شو جی اسکو
خاص اپنے برابر سمجھیں گے اور بہت دولت
ہوگی اور عمر اسکی وراز ہوگی اور دنیا میں

कीर्ति अधिक होगी और देव-
ता लोग उसकी स्तुति करेंगे ३४
मू. दीक्षादानंतपस्तीर्थहो-
मयज्ञादिकाः क्रियाः। म-
हिम्नः स्तवपाठस्य कलांना
हेन्ति षोडशीं ॥ ३५ ॥

श्री. दीक्षा और दान और तप और
तीर्थ और होम और यज्ञ आ-
दि जितनी अच्छी बातें हैं सब
महिम्न के सोलहवें हिस्से को
भी नहीं पहुंच सकती हैं ॥ ३५ ॥

मू. समाप्नोयंसमेस्तोत्रं स-
र्वमीश्वरवर्णनं। अनूप-
मं मनोहारिपुण्यं गन्ध-
र्वभाषितं ॥ ३६ ॥ ३६ ॥

श्री. पुण्यदन्त कहते हैं कि जिसमें
ईश्वर का वर्णन है ऐसा मेरा जो
स्तोत्र है सो पूरा हुआ कैसा स्तो-
त्र है कि जिसकी बराबरी और
स्तोत्र नहीं कर सकता और चित्त
का प्रसन्न करने वाला है ॥ ३६ ॥

मू. महेशान्नापरो देवो महिम्नो
नापरास्तुतिः। अघोरान्नापरो

निकाम भोग का और दुता लोक अस्ति करिग्ये-

अश्लोक

३५
दक्षिणा दानं तप और तीर्थ और होम और
यज्ञ और तीर्थ और होम और यज्ञ आ-
दि जितनी अच्छी बातें हैं सब
महिम्न के सोलहवें हिस्से को
भी नहीं पहुंच सकती हैं ॥ ३५ ॥

अश्लोक

३६
समाप्नोयंसमेस्तोत्रं स-
र्वमीश्वरवर्णनं। अनूप-
मं मनोहारिपुण्यं गन्ध-
र्वभाषितं ॥ ३६ ॥ ३६ ॥

अश्लोक

३७
पुण्यदन्त कहते हैं कि जिसमें
ईश्वर का वर्णन है ऐसा मेरा जो
स्तोत्र है सो पूरा हुआ कैसा स्तो-
त्र है कि जिसकी बराबरी और
स्तोत्र नहीं कर सकता और चित्त
का प्रसन्न करने वाला है ॥ ३६ ॥

अश्लोक

३८
महेशान्नापरो देवो महिम्नो
नापरास्तुतिः। अघोरान्नापरो

मंत्रोनास्तित्वंगुरोःपरमा ३७।

री. शिवजी से परे और देव नहीं है और महिम्न से परे और स्तुति नहीं है और अघोर मन्त्र से परे और मन्त्र नहीं है और गुरु से परे और तत्व नहीं है ॥ ३७ ॥ ३७ ॥

मू. कुसुमदशननामास-

र्वगन्धर्वराजःशशिधर

वरमौलेर्देवदेवस्यदासः।

स्वगुरुनिजमहिम्नोभ्रष्ट

एवास्यरोषात्स्तवनमि-

दमकार्षीदिव्यदिव्यम-

हिम्नः ॥ ३८ ॥ ३८ ॥

री. पुष्पदन्त जो है सब गन्धर्वों

का राजा और शिवजी का दास

सो अपने गुरु की महिमा कर

के क्रोध से भ्रष्ट हो गया था सो

इस महिम्न के बनाने से शिवजी

ने उसको दुःख से बाहर कर दि-

या और उसके भ्रष्टपने को दूर

किया और सब तरह के दो-

षों से उसका उद्धार कर दि-

या ॥ ३८ ॥ ३८ ॥ ३८ ॥ ३८ ॥

मंत्रोनास्तित्वंगुरोःपरमा ३७।

शिका

३८

महाद्विष्ट से ब्रह्म कर और कोणी दियो नहीं है

और महिम्न से ब्रह्म कर और कोणी अस्तुति नहीं है

और अघोर मन्त्र से ब्रह्म कर और कोणी मन्त्र नहीं है

और गुरु से ब्रह्म कर और कोणी तत्त्व नहीं है

अश्लोक

३९

कस्मिन्नामा मर्त्यं गन्धर्व

राजेश्च शशधरं ब्रह्मविद्वि

द्विष्ये दानं - सुगन्धर्वं मेम

भ्रष्टं शशधरं रूपायुः कृतं

दमकार्षीदिव्यदिव्यम-

हिम्नः ॥ ३८ ॥ ३८ ॥

शिका

३९

पुष्पदन्त जो है सब गन्धर्वों

का राजा और शिवजी का दास

सो अपने गुरु की महिमा कर

के क्रोध से भ्रष्ट हो गया था सो

इस महिम्न के बनाने से शिवजी

ने उसको दुःख से बाहर कर दि-

या और उसके भ्रष्टपने को दूर

किया और सब तरह के दो-

षों से उसका उद्धार कर दि-

मू. सुरवा मुनिपूज्यं स्व
गमोक्षैकहेतुं पठति य
दि मनुष्यः प्राञ्जलिर्नान्य
चेताः। ब्रजति शिवस-
मीपं किन्नरैः स्तूयमानः
स्तवनमिदं ममौघं पुष्प
दन्तं प्राणीतं ॥ ३६ ॥ ३६ ॥

री. जो कोई इस स्तोत्र को प्रति
दिन हाथ जोड़ के और शिवजी में
चित्त लगाके पाठ करेगा वह शि-
वजी के निकट जायगा और दे-
वता उसकी स्तुति करेंगे यह
महिम्न स्तोत्र कैसा है कि जल्द
फल का देने वाला है और पुष्प-
दन्ताचार्य का बनाया हुआ है ॥

मू. श्रीपुष्पदन्तं मुखपंक-
जनिर्गतेन स्तोत्रेण किल
विषहरेण हरप्रियेण ॥ क
ण्ठस्थितेन पठितेन समा-
हितेन सुप्रीणितो भवति
भूतपतिर्महेशः ॥ ४० ॥

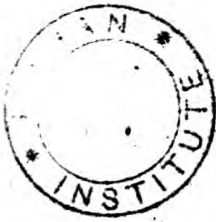
री. जो यह स्तोत्र कंठ होना महा

اشلوک
سر برین پوچینگ سوگ موشینگ
چینگ پخت یدینگه برانجلزیه
چیتاه - برجت شو سینگ کتریه
استویمان استون موموگنگ
پشپ دنتک برنیتنگ -

جو کوئی اس اہتر کو روز روز پاتھ جوڑے
اور شوجی میں چٹ لگا کر پچھ کرے گا وہ شوجی
پاس جاے گا اور دیوتا لوگ اسکی اہت کرینگے
یہ مہمن اہتر کیسا ہے کہ جلد پھل کا دینے والا
اور پشپ دنتا چارج کا بنایا ہوا ہے -

اشلوک
شری پشپ دنت مکھ پنج نرکتین
استوترین کل کچھ برین ہر پرین
گنڈہ استھتین پختین سماہتین
سپریری نو بھوت بھوت پتر نیشہ
شیکا

جسکو یہ اہتر زبانی یاد ہو تا ہے اسپر ہلادی



देवजी प्रसन्न होते हैं कैसा स्तो-
त्र है कि पापों का हरने वाला है
और शिवजी को प्यारा है और
पुष्पदन्त के मुख कमल से नि-
कला हुआ है ॥ ४० ॥ ४० ॥

इति श्री पुष्पदन्ताचा-
र्य विरचितं महिम्ना-
ख्यं स्तोत्रं समाप्तम् ॥
सम्बत् १९३६

चौपाई

करि जिज्ञासा कुन्दन लाल ॥०॥
हरिवंशलास पाण्डन किरपाल
सम्बत् उन्निस सै ते देसा ॥०॥
भाषा स्तुति करी गिरीसा ॥०॥

लिखितं स्वामी दयाल

परिस्तुत होते हैं किसा ही स्तुत्र को पापों
हरने वाला और महादयोजी को प्यारा है और
पुष्पदन्त के मुख कमल से निकला हुआ है -

पुष्पदन्त आर्जुन का
बनाया हुआ महमन स्तुत्र

समाप्त हुआ

चौपाई

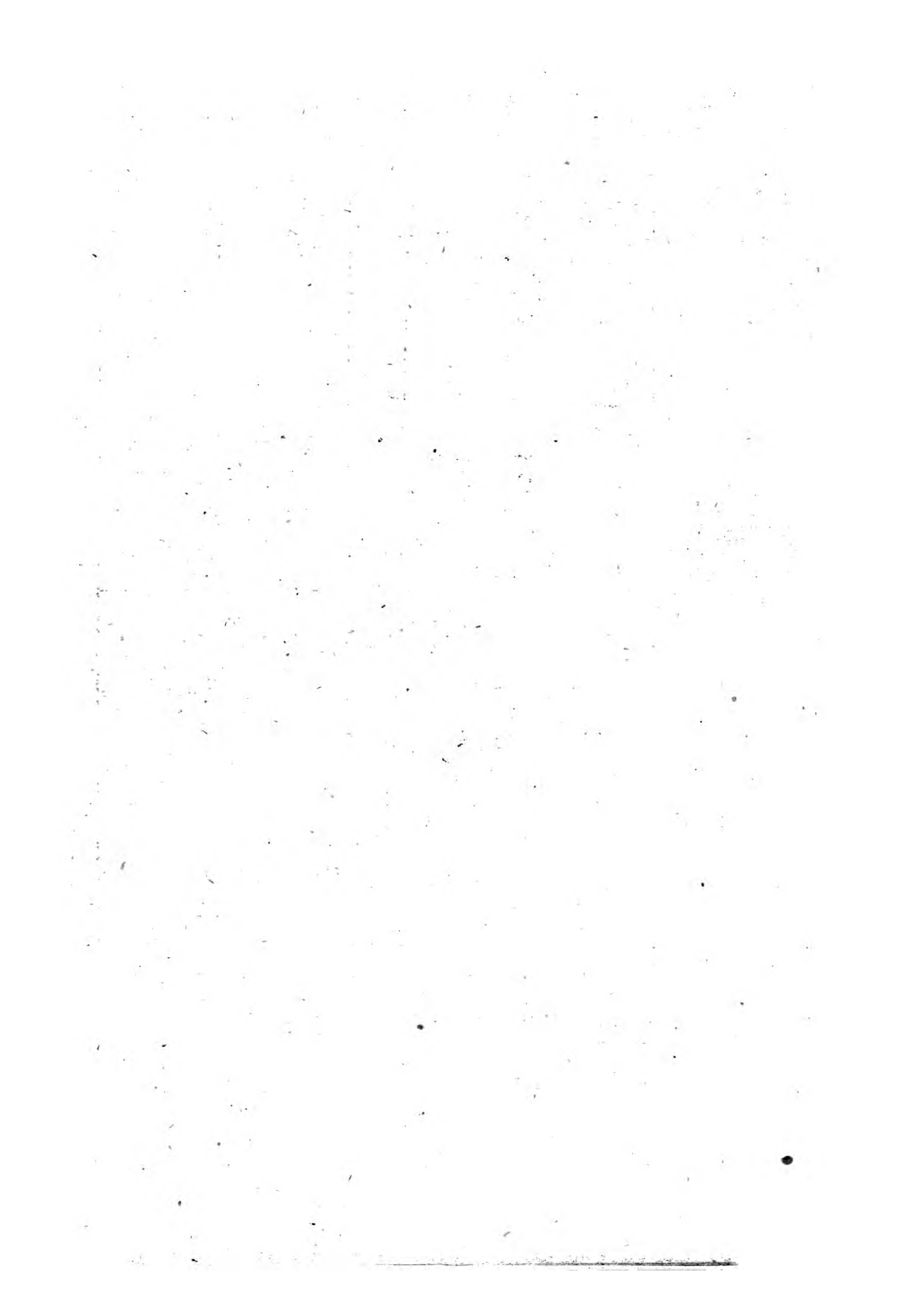
करि जिज्ञासा कुन्दन लाल -

हरिवंशलास पाण्डन किरपाल

सम्बत् उन्निस सै ते देसा

भाषा स्तुति करी गिरीसा

लिखितं स्वामी दयाल





فائز الطبع نقوش و رسم پیدا ہے ہر اک لفظ سے تاثیر محبت لوہے یہ ملک کس گئی تصویر حیرت ۶۴ ۱۲ فصلی ۳۰ ۱۲ بحری جب غور کرے عاشق دلگیر محبت	۶۴ غینامہ ہجر ہی ہر ایا وہ نہیں ہے مجھ کو سن فصلی کی جو نسخ ہوئی فکر حرف ہر مصرع سے بھی پائے بحری
--	--

الحاصلات

خدا کی عنایت اندون کتاب ہر ایا ہر الم موسم تصویر عظیم مولفہ شرف شعرا ہمارا مستند کا
نازک خیال سو مقال ہر شمار بادہ لست خیاب حکیم اشرف علی صاحب متخلص
مہیست صابر سالہ ترکیب صلوہ وغیرہ مطبع نقوشی نوکل شور
واقعہ کا پو ماہ جون ۱۶۷۶ء میں چھپا کر مطبوع طابع
شاعران نامی ہوئی

تاریخ طبع نتیجہ طبع مورخ باوقار لالہ مدن موہن لال ہر شمار خیر آبادی

جس سے دل عاشق ہر چہرے ہر سامان تاریخ ہے آئینہ تصویر غم جان ۱۸۷۶	کیا خوب چھپا مست کا ہر شمار ہر ایا مضمون غم فرقت کے رقم آمین ہر ایا
---	--

بدیاد زانو سے او سر نرا لو	نشستہ مجو حیرت در غم او
بہ چشم کشتہ آن ساق زیبا	نہ انجہ ساق عشق شاح طوبی
ز پایش تا خدا در بند رفتہ	مناشد خوں پامالش نہفتہ
ز خون ل لبشوق آن کف پایا	کند گلگونہ روئے تنہا
بیاد ناخن پائے نگارین	اہل ناخن نہد بر جان غمگین
بنازم طرز رنگینش سریتے	و خون دیدہ آن نقاش معنی
بفکر خاطر حسرت کشتہ	چہ تصویر غم جانان کشیدہ
طراز جادوش کلک خیالست	بنام انیر عجیب سحر حلالست
دل آشفۃ ام حسرتش	خیال آمد ز سال این خیالش
رستم کردم بطرز خوشنالی	سراپائی بت مست وفا

قطعه تاریخ رستم زدہ خامہ جواہر بار سخن در ان معجز رستم
مولوی عبدالغفور خان بہادر سنخ

وہ ست کہ رستم می عشق صنم ہے	ہے گو کہ جوان پیر ہے کہن پیر محبت
گو ضبط سے تیر پیر ہو میل و لیکن	دل خون ہے جان زخمی شمشیر محبت
باقی ہوزمانی میں ابھی م سوا دسی	عزت ہوئی لفت کی کہ توقیر محبت
لکھا ہے نئے طرز سے اسنے جو سراپا	زیبا ہی اسے گر کو تحریر محبت
پر شعر ہے یا ناوک لفت ہو کہیں کیا	فقیر ہے ہر اک یا کہ پیر تیر محبت

از خواب غفلت آن فستنه سرشار
 گئے از مردم چشم سیاہش
 گمہ از سرمہ چشم انتظار سے
 بیاد سوزن قمرگان دلریش
 بشوق مصحف و سے دل آرا
 ز حال عنبرینش چشم بدو و ر
 دو گوشش بود باکان گہفت
 زیاقوت لب و الماس دندان
 لبش را بود الفت باسی کم
 سے زان رو کہ ذوق برگ پاں بود
 بوصف آن دہان تنگ گلرنگ
 بہ نقل حرفش از جادو بیانی
 بہ دل بردن کہ دست او کین کرد
 نہ تنھا دل بدست دستان برد
 بوصف آن کفر دست حنائی
 ز صدق دل بوصف سینہ حسن
 بیا و بشوئے آن نارستان
 ز ناف غنچہ دیش خون نافہ مشک
 از ان موئے میان کونیت دروست

نشد نجش جو چشم خستہ بیدار
 سیہ نختہ برگ دو آہش
 فیادہ در غبار خاکسار سے
 ندو ز دامن صد پارہ خوش
 سے بیند بایض مہر و مہ را
 سویدانا سواد دیدہ پر نور
 لب تحسین بوصف آن گہفت
 بہ نظم و نثر لعل و گوہر افشان
 کہ میگردد از ان یاقوت نیلم
 شہیدش را بہائی خونہا بود
 دہان غنچہ را ہم قافیہ تنگ
 زبان عاشقش در ترجمانی
 ز ساعد نقد دل در آستین کرد
 بزور بازو لیش تا بے توان برد
 کفر عاشق دید بیضای موسی
 جو صبحش در لعل آئینہ حسن
 انا ز خلد کے خواہد ز رضوان
 ز سودا خون بچشم ترشد خشک
 نباشد هیچ شک بر نیکیت از بہت

چراغ و دودمان مجد و پیش
 ز بالادستی عشق قوی زور
 چنانش عشق مرد افکن ز جابرد
 باند و فراق و لبر خویش
 بضبط درد پنهان زار و زنجور
 ز جان کاوی دردش در شب غم
 خیال او بجان پر ز آفات
 کشیدش جذبه عشق و فاکیش
 تصور خاکه تصویر غم کرد
 ز تصویر غم جانانه او
 به صف قد آن سر و سرافراز
 بعشق حسن آن اندام گلرنگ
 چو عهدی بسته پانده قبایش
 ز دست نارسا زد امن او
 کند گیسوی آن لعبت دهند
 حبیب آن بهشتی روسی پر نور
 ز ابر و در اشارت بمبمل او
 ز چشم مست او دل داده از دست
 ز روح گردش او جان بقیاب

بهار بوستان آفرینش
 فتاد از پای می سر مرد سلخو
 که لیشیت پهلوی جان نبر من خورد
 فشانده خاک حسرت بر سینه خویش
 بیاد یار نزدیک و ز خود دور
 نه غیر از شمع کس و بسوزد همدم
 خواب آمد به و بسوزی نفاست
 به آغوش خیال عاشق خویش
 سراپا چشم بر چویش رقم کرد
 چراغ افروخت ماتم خانه او
 قلم بر سر و بالایان کند ناز
 لباس زندگی بر عاشقش تنگ
 کف اخلاص و امان و فایش
 گریبان چاک چون پیراهن او
 بیروش موکشان در غربت دهند
 کشد خط بر حبیب خونه حور
 که بنود خون بهسایر قاتل او
 تخلص میکند مفتون او مست
 فکده گشتی خود را به گرداب

صبر بردل سوخت ز سر هوش رفت
 گنج نط محسن خاکش نهفت
 بنمت ازو خانه معمور شد
 مغز بجوش آمد و از سر فدا
 کشتی دل گشت بسیلاب غرق
 یادشکار از دل صیاد رفت
 از غم لب تشنه دریا گشت
 صبر گران بردل مشتاق شد
 بهر فریب دل نخچیر غم
 پیکر این نسخه که اردو کشید
 آینه صورت زیبا یار
 از اثر معنی سحر آفرین
 طرز بیانش همه رنگین ادا
 ناز و نیاز ست در آغوش هم
 در همه دل جاش چو امید باد

مایه آغوشش ز آغوش رفت
 بطن صدف گوهر پاکش نهفت
 رشک پر ی آب رخ کور شد
 وعده دیدار به محشر فتاد
 خرمن جان رفت بتاراج برق
 کشتنی از خاطر حلا و رفت
 در سر بهیار مسیحا گشت
 طاقت آرام ازو طاق شد
 کرد در قسم نسخه کشید غم
 صورت تقریر لب او کشید
 هست سرایش سرایای یار
 لفظ چو معنی بودش نشین
 سحر کلامش همه مجسم
 خرمن برق ست و فاکوش هم
 چاره ناکا نه جاوید باد

تذکره شاعرین زبان نکتہ پرورش و ابیان حاجی ناظم محمد عبدالمجید
 متخلص شریفه باشند سلامت شاگرد حلقه اکر ام احمد صیغہ

سرایا شوق مست باد عشق
 جوئے عاشق زار حسینه
 جگر خون گشته و دل داده عشق
 بلا گردان حسن ناز نین

تاریخ تسوید تصویر غم از مست ساغرالم

تغیر برین کرتا ہوں تصویر غم جاننا	لازم ہے قلم تجھ کو تو قیر غم جانان
شاخ شجر ماتم کا ہاتھ میں ہے خامہ	کیونکر نہ کھینچے مجھ سے تصویر غم جانان
جہاں مسیحائی پوچھا تو کہا دل نہ	اے عاشق مقبول شمشیر غم جانان
رورو کے شب غم میں اس کلک تصویر	ساتھ آگے کھینچی ہے تصویر غم جانان

۱۸۴
۱۸۵۷

تقریبی کہ سر پر چشم سخن طرازی غارہ رخسارہ نگارہ پردازی خدمت مولوی نصیر الدین حسین
متخلص سامی منصف ضلع سہلٹ برین سراپا رقم فرمودہ

مست سخن آنکہ سخن مست است	رشتہ جان سخن دست است
فکر لطیفش جو رساں دماغ	از نسبت بد مغر چکاند دماغ
در سخنش فکر سخن رساں	تا سخنش گرسخن کس رساں
مست قدم مست سخن سخن	مست تخلص چو کند در سخن
مست سخن آید ہم عشق	ساغر لب ز کیش از دست عشق
بر گل تازہ نظر و خست	دیدہ ز گلہائے دگر و خست
شور قیامت بسرا ز فامتے	آفت جالبش شدہ جان
برق شے گرمی بازار او	شمع شے شمع شب تار او
بر سر دل تیغ نظر خورده	خنجر مرثگان بہ جگر خورده
دل زالم دیدہ زخم پاک شبت	صدید دل خولیش لفظ اک شبت
روز و صا شش چو پایاں رسید	بہریری تخت سلیمان رسید

بیکارتا ہوں روتا ہوں جان کھوتا ہوں لطمہ

دلدار دلنواز دلا را مفاعلان
 بھکھو غم فراق نے مارا مفاعلان
 دیدار آخری نہ ہوا ہاسے یاضیب
 کیوں میرے آگے آہ سفریان سے کر گئے
 پھونکی تمھارے ہجر تن میں وہ آگ ہے
 مانگوں میں ہجر میں ملک الموت سے وصال
 وہ قدر شک نہ روئے آیا نظر کہیں
 پھر زندگی میں کاش میسر وصال ہو
 مرغوب مجھ کو شہر خوشن کی سیر ہے
 کیوں نہ چھپا لیا اوٹھا فورا القاب
 ہے جہین سے خیر خبر کو دھیان میں
 خواہش میں دل کی زیریں لیکے جاؤنگا
 قربان ہوں دل سے یاد جبک جاتی ہو تری
 جیتے ہیں آج تک تمھارے فراق میں
 وہ ناز وہ کرشمہ وہ چتون کہ ہر ہو آہ
 دنیا و دین میں ہما کو کسی سے غرض نہیں
 نقشہ ہمارے رست کا ایجان بگاڑ گیا
 وقت میں بوجھ مست ساں صباں بار

آنکھوں کی میری تپلی کا تارا مفاعلان
 دکھلا دانی کل خدا را مفاعلان
 مشتاق رہ گیا میں تمھارا مفاعلان
 وعدہ یہی تھا مجھ سے تمھارا مفاعلان
 دل جلکے ہو گیا ہے شرار مفاعلان
 اب ندگی نہیں ہے گوارا مفاعلان
 ڈھونڈھا ہوں شہر باغ بھی سارا مفاعلان
 امن کبھی چھوڑوں تمھارا مفاعلان
 لون حاکم قضا سے اجارا مفاعلان
 ہے بسکہ اشتیاق تمھارا مفاعلان
 رکھ دوں گے یہ تیج دو دھارا مفاعلان
 دیکھنا نہ تجھ کو ٹٹے دو بار مفاعلان
 وہ لطف نہ وقادہ مدار مفاعلان
 بھولی ہے مرگ نام ہمارا مفاعلان
 وہ غمزدہ وہ ادا وہ اشارا مفاعلان
 ہے غم ترار فراق ہمارا مفاعلان
 نئے جو کام اپنا سنوارا مفاعلان
 دل نے کہا کہ واسے پیارا مفاعلان

لفظ مفاعلان
 ایک مرتبہ
 ایک مرتبہ
 اعداد
 ایک مرتبہ
 ایک مرتبہ

یا توں کے خیال میں درو دیوار سے سر ٹکیتا ہوں دیوانہ وار بکتا ہوں گھیبوئی
 خاک چھانتا ہوں کسی کا کہا نہیں مانتا ہوں سر دھنتا ہوں تنکے چننا ہوں
 سر پر ایک قیامت برپا ہے یہی شغل مسیح مسیح
 یاد میں یا توں کی ہر باد یہ گرد سی کام کرتے ہیں امیرت ہم شہت دی ہم

کفیا

کفیا کی یاد میں اڑیاں رگڑتا ہوں خار سیا بان سے جھگڑتا ہوں ٹھوکرین
 کھاتا ہوں گرا جاتا ہوں مسیح
 ادس کفیا کے تصور میں سیاجاتا ہوں کیا تبائیں ریگئے ہیں ہم عجیب قیاد میں

ناخن یا

ناخن پا کے تصور میں سینے میں جلش ہے دل کو طیش ہے مسیح
 جلے رخ رشید رو کا ناخن یا پلا تاگر ہلال عید خنجر بنکے کیا جھکو ڈراتا ہے

کفش

کفش زہرین کے دھیان میں دل یا پاں ہے زندگی و بال ہے چھیاڑین
 کھاتا ہوں سر پر خاک اوڑھتا ہوں مسیح

ٹھوکرین درد کی کھلواتی ہے یا کھٹش پا
 خاک ہر کوچے کی چھلواتی ہے یا کھٹش پا
 باوجود اس حال پر ملان عالم مفارقت پر اوقت کے یہ بھی مقام شکر ہے کہ تصویر یار میں
 زندگی بسر کرتا ہوں سوائے اوسکے کیس کا دم نہیں بھرتا ہوں مسیح

گو نہیں وہ روبرو دھیان کی توفیق ہے
 اندنوں انپا تصور ہر تصدیق ہے
 لیکن جب ضبط کی تاب نہیں ہتی ہر مضطرب قرار ہوتا ہوں یہ اشعار پڑھ کر ادس پیخ کو

تصویر

۱۵

آئینہ زانو کے تصور میں صبر و سہم تھا
کی قلعی کھل گئی ضبط کی تاب نہیں
چہین نہیں شب کو خواب نہیں
آب ایک کا منہ تکتا ہوں آپ ہی آپ کچھ
کہتا ہوں کبھی حیرت ہے کبھی آہ و فغان
کی شدت ہے

یا جب آتا ہے زانو تیرا
ہاتھ ہوتا نہیں زانو سے جدا

ساق

ساق کے دھیان میں کبھی دم گھٹنے لگتا ہے
کبھی سکتا ہے کبھی آہ و زاری
عرش کے پائے ہلاتا ہوں کبھی بقیارمی سے
تکلاتا ہوں
یاد شمع ساق میں اکشن بجان ہر دل مرا
موم تھا اب شعلہ آتش فشان ہل مرا

پانچامہ

پانچامہ کے خیال میں سوت پاپہ ہوں
زانو پٹیتا ہوں سر ٹکراتا ہوں
عجیب مصیبت کے
کھیرے میں آگیا ہوں کہ نکلنا دشوار ہے
عم کھاتا ہوں نج اوٹھاتا ہوں
یاد آتا ہے جو اوسکا پانچامہ تنگ و سست
بیکلی حد سے سوا ہے زلیست میں تنگ ہو

کڑے

کڑے کے تصور میں جی سخت گھبراتا ہے
دل وہ پاؤں نکالے ہیں کہ ہاتھوں سے نکالا جاتا ہے
کڑوئی یاد میں ایسا میں گر دانا مضطرب ہوں
کہ بتیابی سے کچھ کے باہر گاہ اندر ہوں

چھڑے

چھڑوں کی یاد دم توڑے دیتی ہے
نئے موت جان لیتی ہے
چھوڑنے کی نگرانی مست تبیر
چھڑوں کی یاد میں نیا پیر

پاؤں

۱۲ بتیا بیہ عاشق کی بھلا کس کو خبر ہے	نصیب یا دشمن صاف میں جان دو جگر ہے
ناٹ	ناٹ
ناٹ کے دھیان میں درطہ غم کے چکر میں آگیا ہوں دل میں دریا رخ موجزن ہے شب روز اسی فکر میں گھل گھل مرتا ہوں خموشی قفل دہن ہے بحر الم دل میں جوش کھاتا ہے جی ڈوبا جاتا ہے شعر	ناٹ کے دھیان میں درطہ غم کے چکر میں آگیا ہوں دل میں دریا رخ موجزن ہے شب روز اسی فکر میں گھل گھل مرتا ہوں خموشی قفل دہن ہے بحر الم دل میں جوش کھاتا ہے جی ڈوبا جاتا ہے شعر
غریق درطہ غم ہوں خیال ناٹ لہر	تڑپتا ہوں بس شکل ناٹ ہے بے آب دل بڑی
کمر نازک کے خیال میں لپ پڑنا تو انی کا زور ہے زمانے میں جسم نزار کی خفا کا شور ہے ضعف سے غش کا ہے نخلہ شگھایا جاتا ہے شعر	کمر نازک کے خیال میں لپ پڑنا تو انی کا زور ہے زمانے میں جسم نزار کی خفا کا شور ہے ضعف سے غش کا ہے نخلہ شگھایا جاتا ہے شعر
ناقوان چون اس قدر یاد میان یار	بالا موتا گمان ہے میر جسم نزار پر
مولوی عبد الغفور خان بہادر لکھنؤ	شعر
سے کمر کی یاد میں السیان نزار ہوں	ملتا نہیں شان میر جسم نزار کا
کو لے	کو لے
کو لون کی یاد میں دل ٹوٹ گیا ہے جی جھوٹ گیا ہے شعر	کو لون کی یاد میں دل ٹوٹ گیا ہے جی جھوٹ گیا ہے شعر
مجھ سے تو ابھی بارالم اوٹھ نہیں سکیا	کو لون کی جدائی میں کمر بٹھ گئی ہے
سُرن	سُرن
سرنو کی خیال میں سر پر کو غم ٹوٹ پڑا ہے اوٹھنے کی تاب نہیں جی بیٹھ گیا ہے شعر	سرنو کی خیال میں سر پر کو غم ٹوٹ پڑا ہے اوٹھنے کی تاب نہیں جی بیٹھ گیا ہے شعر
خیال اوسکے سر پر صاف کا جو مجھ کا آہا	مثال انیہا مسست ہر دم سر نزار ہوں
زالو	زالو

تصویر	۱۳۳	جائے ہیں وحشت دل سے کوئی محرم نہیں لوگ دیوانہ بنائے ہیں شعر
محرم کے خیال میں وہ تنگ آتا ہوں	دم سنیے میں لگ جاتا ہے گھبراہٹوں	
چڑیا		
انگیا کی چڑیا کے تصویر میں اپنے ہاتھ کے طوطے اور گئے طائر دل قفس سینی		
میں گھبراتا ہے دم ہوا ہوتا ہے جی سنسناتا ہے شاعر		
چڑیا انگیا کی جو یاد آتی ہو غیر گل	مہوش دم بھر میں اوڑا دیتی ہر شان بل	
چڑیا انگیا کی یاد دلو اگر	طائر دل اوڑا دیا کیس نے	
مولوی عبدالغفور خان بھادر نساح شعر		
او کی انگیا کی جو چڑیا کا مجھ رہتا دھینا	ہے کھدست آشیانہ طائر افسوس کا	
کرتی		
کرتی کے خیال میں جامہ تن کو چاک کرتا ہوں غم جانان گریبان گیر عشق		
کے جال میں برا بھنسا ہوں رہائی کی خاک تدبیر شعر		
سے دام بلا جالی کی کرتی کا خیال	کیون نہ لیت نہ ہو طائر دل کو وبال	
پشت		
پٹھہ کی یاد میں کمر خم ہوئی جاتی ہے پٹھہ بستر سے لگی جاتی ہے شعر		
اوس پٹھہ کی فرقت میں جال ہوا ہے	اک در ہے سینیہ میری ہی پشت دوپٹا	
شک		
شکم صاف تصویر دل مکد ہو طرح غم کی لپیٹ میں آ گیا ہوں بدین کا خیال نہ دنیا کی		
خبر ہو زندگی کے دن بھرتا ہوں غم کھاتا ہوں مرتا ہوں شعر		

یاد میں نگہ خفا کے کیا کہوں کیا حال ہے | دل پہ خون اندھ ہی اندر سے منہ لگاں

گشت

او نگہوں کے خیال میں ناخن عم جان خراش ہے دست تم سے جگر تاشی تاشی ہے
اون او نگہوں کی یاد میں ہزار ہوا ہوں | مثل مہ نو شہر میں گشت کا ہوں

جان

ناخنوں کی یاد میں جان کنی ہے دل خراشی ہے سینہ کا وی ہے جگر تاشی ہے
یاد ناخن ہے رہی ہے اب جگر میں چٹکیاں | ہجر جان میں کسی ڈھب جگہ کل گزیر

چھلے

چھلکے تصویریں گشت حیرت زندان میں ہے جال کیمی گریبان کھنڈان ہوں
یاد میں چھلکے گل کھاتے ہیں ہسم | دھیان میں گلشن کو کب لاتے ہیں ہم

آرسی

آرسی دھیان میں آئے دل کلوڑ کلوڑ اور گئے جگر کو تھارے تھارے ہوں
دوست دشمن دیکھتے رہتے ہیں مجھ کو ہر گھڑی | شکل تصویر آرسی کی یاد میں حیران ہوں

چھاتیان

چھاتیوں کی یاد میں پہلو میں دل ملا جاتا ہے کلیجہ منہ کو آتا ہے آہ ہمارا ہے
نالہ و مساز ہے سانس اولٹتی ہے چھاتی چھاتی ہے
سینہ کوئی کر رہا ہوں چھاتیوں کے دھین | سخت بتیاب دل کچھ دم نہیں ہے جان میں

انگیا

انگیا کے خیال میں تن کی خبر ہے نہ چاک پیر میں کی خبر ہو بند بند اپنے ڈھیلے ہوئے

کلائیوں کے خیال میں اس حال کو پہونچا ہوں کہ یک دست کف افسوس ملتا ہوں
 کبھی جی کو نہ کل آئی شب و روز یچیں رہتا ہوں سوز و رن سے جلتا ہوں بھین
 جھوٹ گئیں ہیں جو اس ٹھکانے نہیں ہیں شعر

دیتی ہو دست جل تک کلائی پہونچا | یادے مست نگر او نکی کلائی پہونچا

چوڑی

چوڑیوں کے تصور میں سارا بانگین خاک میں مل گیا ہے جان لب پر پہونچی ہے
 احباب حال پوچھنے کو لگتے ہیں جب میں بتانے لگتا ہوں وہ سننے کی تاب
 نہیں لگتے ہیں رو کر اوٹھ جاتے ہیں شعر

چوڑیوں کا خیال ہے دن رات | ہوں اسیر کند غم بہیات

ہاتھ

ہاتھوں کے خیال میں پارہ پارہ دامن سے ٹکڑے ٹکڑے گریاں ہیں
 کبھی سر پر ہاتھ ہے کبھی جگر پر ہاتھ شعر

یہ حال ہو گیا سر ہاتھوں کی یاد میں | یہاں میں دل ہو بھول ہو جیسے ملا ہوا

کف دست

بھیلیوں کی یاد میں دل سر کف ہے غم خنجر کف شعر

کہیں رہا کس سے حال اپنا ہم جدائی میں | جگر خون ہو گیا یاد کف دست کی

رنگ حنا

رنگ خاکے دھیان میں تلووں سے آگ لگی ہے منہ پر ہوائی اوڑتی ہے
 رنگ اپنا فق ہے غم ہے الم ہے رنج ہے خلق شعر

تصویر ہر دم بیکلی رہتی ہے غنچہ دل کھلا یا جاتا ہے گلشن کو خار چنیا گلی کی یاد میں کسی دوش چمن ہستی نہیں بھاتا ہر	
چنپا گلی کی یاد میں کیسی بیکلی	محکم نہیں بیان ہو ایسی ہے بیکلی
شانہ	
شانوں کے تصویریں دست اختیار جی چھوٹا جاتا ہے سہا کے شرتہ جان ٹوٹا جاتا ہے	
گاہ سینہ کوٹتا ہوں پتیا ہوں گاہ سر	مارتا ہوں ہیا نہیں شان کے گاہے بوٹیا
تصویر میں ہر ادس لبر کا شانہ	بنا ہوں ناوک غم کا نشانہ
بغل	
بغلوں کے خیال میں خار ہلو سے دست و بغل ہے چشم و خواب میں جنگ و جدل ہے	
نکتہ تک مجھے بغلگیر نہیں ہوتا ہے	اوسکی بغلوں کے تصویریں بغل خالی ہے
بازو	
ڈنڈ کی مچھلیوں کے دھیان میں مثال ماہی ہے آب ٹپ ٹرکیز زندگی بسر کرتا ہوں	
دانہ پانی حرام ہے نہ جتیا ہوں نہ مڑتا ہوں	
تصویریں سیکر ڈنڈ کر میں مچھلیاں ہر دم	نہو کیون چشم گریاں میں مری عالم سمندر کا
نورتن	
نورتن کی یاد میں چھپکے چھپوٹ کئے ہیں حیران بتا ہوں بارہ جینے رنج و الم در غم	
سوتا ہوں آٹھ آنسو روتا ہوں اسی شش و پنج میں جان کھوتا ہوں	
تکھیں بھی پھر کیوں رو ڈھلکنا منکا دین	یا جو بازو پہ آیا نورتن ہلکا ہوا
کلائی	

کلو

گلے کی یاد ایک بلا ہے ہر دم چھری تلے گلا ہے جان پر بن گئی ہے مرنے کی
ٹھن گئی ہے پچی بندھی کھال ردی ہے

گلے کی یاد میں دم ٹوٹتا ہے گلا ہے میرا اور دست بجا ہے

گردن

گردن کے تصور میں کار ویر استخوان پہنچی ہے ہونٹھون پر جان پہنچی ہے
ہر دم آہ بھر اٹھتا ہوں شہیم نالہ کر اٹھتا ہوں

سے تصور بیاض گردن کا میری ہر رات صبح محشر ہے

طوق گردن

طوق گردن کے تصور میں حلقہ جبریت گلو گیتو زندان الم میں اسیر ہوں باؤنہیں غم کی زنجیر
لبوں سے آشنا ہو حال کیونکر بھلا کر خیال طوق گردن کھوٹا ہوا بگایا

جگنو

جگنو کے دھیان میں ہر شب مثل کرم شب تاب ہوں سے شرابے نکلتے ہیں دوست
دلسوزی سے مجھ پر رحم کھاتے ہیں دشمن جلتے ہیں

یاد میں جگنو کی جھپکا اور داغ دل مرا بڑھ گیا خورشید محشر سے مہ کامل

دھکدھکی

دھکدھکی کے خیال میں شعلہ شوق بھڑکتا ہے سینہ میں مرغ دل بھڑکتا ہے
ہے عجب ایک بقیار غیظ نا شا دین دل بھڑکتا ہے جڑاؤ دھکدھکی کی یاد میں

چنپا کلی

دہن

دہن تنگ کے دھیان میں زندگی سے دل تنگ ہے تیر ہے اور سنگ ہے
دن رات روتا ہوں سیل اشک سے جہان کو ڈوتا ہوں شمع

یا دہن تنگ میں دل تنگ ہوں ایسا رتہا ہے مجھے غم سدا ملک عدم کا

دانت

گو ہر دندان کے خیال میں دانت ریزہ الماس کا کام کرتے ہیں ہم قاتل کو نام
دھرتے ہیں ڈارہیں مار کے روتا ہوں سدا موتی پر دیتا ہوں عزت و آبرو کا
کھا نہیں بایں نہیں کوئی ہمدرد غمخوار آس بایں نہیں شمع

ہوئے بیہوش دانت بیٹھ گئے یا د آئی جو برق دندان کی

زبان

زبان کی یاد میں کبھی تو خاموش کھڑا رہتا ہوں کبھی بیہوش پڑا رہتا ہوں کبھی
لب نہیں کھولتا منہ سے نہیں بولتا اور کبھی لب پر آہ ہے کبھی نالہ جابجا ہے
کبھی دھڑکے شور مچاتا ہوں کہ آسمان کو سر پر اٹھاتا ہوں شمع

زبان کی یاد میں خیال ہر لمحہ کہ نہیں سکتا عجب مشکل چپ ہنا کہ چپ بھی نہیں سکتا

چاہہ دقن

چاہہ دقن کی یاد میں ہر ایک چشم چشمہ جاری ہے یہ زور آشکباری ہے اسی
چاہہ کی دولت عقل باؤلی ہو گئی ہے کنوین جھانکتا ہوں کو پیہ و بازار میں
ڈانوان ڈول پھرتا ہوں خاک پھانکتا ہوں شمع

ہوں غریب بحر غم چاہہ دقن کی یاد میں اک سمندر موج زن ہر خاطر ناشادین

بالی خیال میں بلا کا سامنا ہر زندگی محال ہے ضعف سے آنکھوں میں چٹکے ہیں اجال ہے شب
یا داتا ہے جب سر کل کا بالامجھکو

بند

یا قوت کے بندوں کی مادیں قوت اپنا سیر کی کئی تہج جان کنی ہے
بجلیاں کن مذتی ہیں مشرق نظر اڑتے ہیں ہوش

یا داتا ہے جو تانبہ وہ بندامجھکو

بجلیاں

بجلیوں کے تصور میں تین غم خیز جاں نواز ہے اشکوں کی جھڑی شب فرہیت
بجلیوں کی یاد میں وہ مضطرب احوال ہے

برق کا شعلہ ہے جو تن پیر ہماراں ہے

لب

لب لعل کے خیال میں ہو ٹھہر کاٹا ہوں خون روتا ہوں لبوں پر دم سے
اشک خونی سے روز منہ دھوتا ہوں در رنج و الم فرد

تال لب گور کوئی دم میں ہی جاناں مجھکو

سرخیاں

پان کی لالی کی یاد میں جان کے لالے پڑے ہیں خون تھوکتا ہوں چھاتی پر
غم کی سل ہے جی ق ہے دم خند ہے بیکار دل فرد

مجھکو طبعیت شربت عذاب چاہیے

مستی

مستی کے تصور میں سارا جہاں اپنی آنکھوں میں سیا ہے لب پر کبھی تال ہے کبھی بہت
دھیان ان ہو ٹھونکی مسی کا جو آجاتا ہے

اک اندھیرا سامری آنکھوں میں چھایا تھا

تصویر

کاجل

کاجل کے تصور میں سنگ تم سے دل یس کے سرمہ ہو گیا ہے آنکھوں میں غماز
غم ہے چشم منظر گاہ بے بھرا جاتی ہے گاہ غم ہے بلبیت
ترے کاجل کا دھیان ایسا غصہ ہے

مرا ہر روز روشن تیرہ شب ہے

بینی

بینی کی یاد میں ساری خود بینی جاتی رہی اناک رکڑا کر تا ہوں غم مفارقت میں جان
بلب ہوں مہر تا ہوں سائنس تیز تیز چلتی ہے آہ آتش ریز نکلتی ہے بلبیت
ہر روز جدائی میں نیارنج و الم ہے

بینی کے تصور میں مرا ناگ میں دم ہے

رخسار

رخسار گل رنگ کے تصور میں مثل گل صد برگ غدار پارہ پارہ ہے دل کا حال
چہرے سے آشکارا ہے جگر متاب ہے دیدہ بنجواب ہے منہ زرد ہے سینہ میں
در ہے آہ خرب بھرتا ہوں نالہ آتش میں کرتا ہوں بلبیت
یاد رخ گل رنگ میں تیرے ہیں دکھانی
مولوی عبدالغفور خان بہادر لکھنؤ رحمت اللہ تعالیٰ

یاد کرتا ہوں گھر بھول رخسار و نکو
بھونکد نالہ سوزان مرا گلزار و نکو

کان

کانوں کے دھیان میں نالہ کا زور ہو افتخار کا شور ہو دل غمناک ہو خیمہ مناک ہو فرد
یاد میں کانوں کے تیرے روز و شب کا حسن
مست تیرا کر رہا ہو خوب ہی کانک سنیاں

بالی

یاد ابرو میں تمھارے گٹ گئے ایامِ غم	ہجر میں ہر دم ہمیں شمشیر کا دم ہو گیا
شاگرد حافظ اکرام احمد ضیغم بلیت	
مولوی حافظ رشید البنی تخلص بہ وحشت مفتی عدالت دیوانی ضلع ہوگلی	اور طنی کہتے ہیں جسکو میان ہی شمشیر کا
دھیان بہتا ہی جو ابرو بت بے سیر کا	۵

چشم مست کے دھیان میں شکل بادہ جوش و صوت شیشہ خروش و شغل گریہ دم آہ و زاری
سے کام نہ چلائے جاگئے سحر ہوتی ہے سب آنکھوں میں بس بھونپی ہوئی جاتا ہے غش آتا ہے فرو
ہو گمان احباب نے یہاں ہل چکا آنکھوں نشوونیل

چشم ہمایون مجھے مارا
مردم آزار نے مجھے مارا

شرکان
 تیر شرکان کے خیال میں ناوک غم سے سینہ فگار ہے خدنگ الم ہلو مدین و سہار
 چشم خونبار ہے چہرہ زعفران زار ہے بلیت

و مہدم دل پر مرگے تیغ ستم کا وار ہے	ناوک غم یاد و مرگان میں جگر کے پار ہے
-------------------------------------	---------------------------------------

حضرت شاہ رؤف احمد رافت رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ

یہ کسکے مژگان کے آہ یارب کہے ہیں برے ہمارے برین
کہ شکل غریباں پڑ گئے ہیں ہزاروں روزن دل و جگر میں

مولوی عبدالغفور خان بہادر لکناؤ	
بادشاہان میں کسی کوٹ نہ چین آیا	خار کبیر سے فروں ہر تار پیرا ہن میں

نصف اول و ثانی

لا ادر می

ہر خطہ او سکی چوئی دل مانگتی ہر جھجھ سے
کا کرنے کس بلا کو تھچھے لگا دیا ہے

موباف

موباف کے تصور نے شکنجہ غم میں کھینچا ہے کوڑے لگا رہا ہے بیت

رکھتا ہے سدا پہ میں شتاق شمع کو
چوئی سے تو موباف بھی کچھ کم نہیں ہو

پیشانی

پیشانی صاف کے خیال میں چین چین میں
بہاں سر سر پٹیا ہوں اپنی سر نوشت کے لوتار

کہ بہیات دست قدرت میری قسمت میں یکلم رنج و الم لکھا تھا ہر دم ہی غم میں جا کھو ہوں

بیت

روز و شب لو رہی ہی یاد پیشانی مجھے
دیکھے آئندہ کیا آفت ہی پیشانی مجھے

افشان

افشان کی یاد میں جان سے دست افشان ہوں ہے کو بان ہوں نالان ہوں زمین نیاز ہوں

ما تھار گوتا ہوں اپنی قسمت سے لوتا ہوں شب کو آخر شمار ہی ہے و کو برقرار ہی ہے

بیت

تصور ہے افشان حسین کا
نہیں رکھے گا اب مجھ کو کہیں کا

ابرو

ابرو کے خمار کے تصور میں جان پر کھینٹا ہوں مضیبتیں جھیلنا ہوں خنجر خونخوار

غم کا دل پروا ہے آنکھوں پر پیش نظر نلوا رہی تلوار ہے بیت

یاد ابرو میں سدا ہے سامنا تلوار کا
کیا ہی امیست بھیل ہی لفت لگا

حافظ اکرام احمد ضیغم

تصویر غم

۳۵

جسم غم اندوز متر قدم یہ جلتا ہے کہ تماشا سر و چراغان سے دو چند ہوتا ہے **ملیت**
ہے شہر بیاہجرت ماہ قفائیں جان پڑ گئی یا و قد بالکے بلا میں

دو پیٹ

دھانی دو پیٹے کے دھیان میں ل بزنک گندم سپا جاتا ہے چاروں طرف غم ستا تا ہے
حاکم خمسہ معدوم ہے جان شہر ہے آٹھون پیر بج دالم کا ہجوم ہے **ملیت**
یاد اوس دھانی دو پیٹے کی جو آ جاتی ہے ہجرت میں سر یہے ایک بلا لاتی ہے

زلف

زلف پر پیچ کے خیال میں مجموعہ عقل و ہوش اپنا پریشان ہے دل دیوانہ وار خانہ بدوش
وسر گردان ہے ضعف سے لڑا کھڑا ہے بیڑیاں کھڑ کھڑا ہے بلا کا اندھیر
زندگی سے جی سیر ہے **ملیت**

مارا ہوا ہوں کا کل پیمان باریکا بن جائے کیونکہ ہر کوئی سنگ مر مر سنا

اوستادنا حضرت حافظ اکرام احمد ضنیغ رحمہ اللہ تعالیٰ شاگرد شاہ رؤف احمد رشت

دور ہوتا ہے انہیں کل خیال یا زلف سور ہوں جن میں کھا کر نہ تھو اسانیکا

مدتوں میں ہا جو مار کا کل کا خیال رفتہ رفتہ ہو گیا آخر وہ بھیو اسانیکا

مولوی عبدالغفور خان ہا درتخلص شہباز شاگرد حافظ اکرام احمد ضنیغ و مولوی شہباز شہباز

کاٹے کھاتے ہیں درو دیوار یا زلف میں کام آرد سے سوا ہر حلقہ در ہو گیا

چوٹی

چوٹی کی یاد میں لے بیچ و تا کھاتا ہے ایک بلا بھیجے پڑی ہی دم او کھا جاتا ہے **ملیت**

ہے یاد میں ہی چوٹی کی حرف جینے پر کہ سانپ لے لے رہتے ہیں میر سینے پر



تصویر غم عشق نگار سراپا بہار از گلک خیال بر بقیعہ سینہ کشیدن شیوہ دل داد کا نسبت
 و تقریر اہم فہم و دل از غفلت شعار و عین بیج و بلال از گوش دل شنیدن کار عاشقان فرد

عیان می مست جس کے اپنی بیرونی سراپا ایک ایسا کر قہم او آفت جان کا

ہجر جانان میں اپنی بیباکی دل کا حال کیا تیاؤں تہ قرار می آہ وزاری کا احوال کیا سناؤں
 سوز و غم سے زبان چلی جاتی ہے نفس سرور کی باعث ہر گ و پے گلی جاتی ہے جسم زار
 میں روز ناتوانی ہے رعشتہ نمودار ہے دیدہ شکل دلبر ندیدہ عین سوز میں شکار ہے

میان جرات

بہرین تہی نہیں جانان کی جدائی مجھ کو کاش بجائے کسی کی کہیں آئی مجھ کو

قامت

اوس قامت شکستہ سنا کے تصویریں سرور کا صنوبر دل سے پیوند ہو تا ہی سوز و فراق سے



هُوَ الْغَفُورُ الرَّحِيمُ

چہ پر ہی از دل اندوہ گینے کہ تصویر غرضش باشد چہ

سپای سپا المسمی بہ

تصویر

من تصنیفات خدمت حکیم اشرف علی صاحب تاج

صاحب سالہ ترکیب الصلوٰۃ ورسالہ دافع السموم ورسالہ ہیضہ و

طاعون ورسالہ چچک ورسالہ گشتی

مطبع نشی نوکش و مقام کانپور میں چھاپا

Jaswār-ē-gam.



Indian Institute, Oxford.
The Lucknow Sparks Library.
Presented
by
Munshi Abdul Kishore.

